संस्कृत भाषा, भारतीय संस्कृति तथा प्राच्य भारतीय विद्याओं से सम्बद्ध

प्रकाशन सूची

प्रकाशन विभाग, अनुसंधान संस्थान

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय

वाराणसी २२१००२

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

प्राच्य भारतीय विद्या की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि से सम्बद्ध सूचना

प्रिंसेस आफ वेल्स सरस्वतीभवन स्टडीज़ सीरीज

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय को यह घोषित करते हुए महान् हर्ष का अनुभव हो रहा है कि '**प्रिंसेस आफ़ वेल्स सरस्वतीभवन स्टडीज़**' का प्रकाशनारम्भ सन् १९२२ में होकर १९३८ ई० तक १० भागों का प्रकाशन, महामहोपाध्याय **गंगानाथ झा**, महामहोपाध्याय **गोपीनाथ कविराज** एवं पाश्चात्य प्राच्य भारतीय विद्याविद् **कर्नल जी० ए० जैकब** जैसे विश्वविख्यात विद्वानों की देख रेख में, सम्पन्न हुआ था। अपनी आनुसन्धानिक फलश्रुतियों एवं प्राच्य भारतीय विद्या के क्षेत्र में तलस्पर्शी निष्कर्षों के कारण उक्त प्रकाशन भारतवर्ष एवं वि[illegible] के अन्य देशों में प्राच्यविद्याओं के क्षेत्र में आधुनिक अनुसन्धान के लिए दि[illegible] निर्देशक सिद्ध हुए। फलतः इनकी इतनी माँग हुई कि स्वल्पसमय में ही दश[illegible] भाग 'आउट आफ प्रिन्ट' हो गये। तदनन्तर लगभग ५० वर्षों तक उक्त प्रकाशनों के पुनः प्रकाशनार्थ देश-विदेश के महान् विद्वानों की प्रेरणाएँ इस विश्वविद्यालय को सम्बल प्रदान करती रहीं; किन्तु साधनों के सुलभ न होने के कारण यह विश्वविद्यालय हार्दिकरूप से चाहते हुए भी वैसा नहीं कर सका।

उक्त परिस्थितियों के दबाव एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बाध्य होकर विश्वविद्यालय को इनके प्रकाशन की योजना '**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग**' के समक्ष प्रस्तुत करनी पड़ी। प्राच्य भारतीय विद्याविद् इस संवाद से आनन्दि[illegible] होते हुए '**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग**' के प्रति कृतज्ञ होंगे कि उन्होंने हमार[illegible] उक्त योजना पर सहर्ष स्वीकृति प्रदान करने की कृपा की।

यह भी अत्यन्त हर्ष का विषय है कि विश्वविख्यात दार्शनिक एवं प्रख्यात प्राच्य विद्याविद् वर्तमान कुलपति श्रीगौरीनाथ शास्त्री जी ने उक्त दशों भागों के सम्पादन की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। सम्प्रति दशों भागों का मुद्रण एक साथ चल रहा है और हमें पूर्ण विश्वास है कि इनका प्रकाशन इस वर्ष के अन्त तक सम्पन्न हो जायगा।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय से प्रकाशित होने वाली ग्रन्थमालाओं, हस्तलिखित-ग्रन्थसूची, अनुसन्धान-पत्रिका तथा पञ्चाङ्ग का संक्षिप्त परिचय

सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला—इस ग्रन्थमाला का प्रकाशन सन् १९१८ में प्रारम्भ हुआ था। अब तक इसमें ११८ ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हो चुके हैं। इस ग्रन्थमाला में संस्कृत के प्राचीन महत्त्वपूर्ण दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं।

सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला—इसका भी प्रकाशन सन् १९१८ से ही हो रहा है। इसके प्रारम्भ के १० भागों में अंग्रेजी और संस्कृत में अनुसन्धानात्मक निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। इसमें अनुसन्धानात्मक निबन्धों एवं पाण्डित्यपूर्ण नवीन रचनाओं का समावेश किया जाता है। अब तक इसमें २९ ग्रन्थ प्रकाशित एव मुद्रित हो चुके हैं।

गङ्गानाथझा-ग्रन्थमाला—विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इस ग्रन्थमाला का प्रारम्भ किया गया है। इसमें हिन्दी अनुवाद के साथ संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। अब तक इसमें ८ ग्रन्थ प्रकाशित एवं मुद्रित हो चुके हैं।

गङ्गानाथझा-प्रवचनमाला—इसमें दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर आमन्त्रित विशिष्ट विद्वानों के द्वारा शास्त्रीय विषयों पर पढ़े गये निबन्धों का समावेश होता है। अब तक इसमें १२ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

सम्पूर्णानन्द-ग्रन्थमाला—इसका आरम्भ विश्वविद्यालय बनने के बाद किया गया है। इसमें संस्कृत-भाषा में आधुनिक विषयों पर लिखे गये ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। अब तक इसमें १० ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

गोपीनाथकविराज-ग्रन्थमाला—इसमें संस्कृत के प्रकाशित ग्रन्थों के परिष्कृत संस्करणों के पुनः प्रकाशन की योजना है। इसमें अब तक एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है।

वल्लभवेदान्त-ग्रन्थमाला—इसमें वल्लभवेदान्त के ग्रन्थों को प्रकाशित करने की योजना है। अब तक इसमें १ ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है, जिसमें तीन ग्रन्थ संगृहीत हैं।

पालि-ग्रन्थमाला—इसमें पालि-भाषा के विशिष्ट ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। अब तक इसमें अभिधम्मत्थसंगहो के २, भाग विशुद्धिमग्गो के ३ भाग प्रकाशित हो चुके हैं, तथा पालित्तिपिटकसद्दानुक्कमणी भी प्रकाशित हो चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

९. **योगतन्त्र-ग्रन्थमाला**—इसमें विशेषरूप से योगतन्त्र-विभाग द्वारा प्रणीत अथवा सङ्कलित योगतन्त्र-विषयक ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। इस ग्रन्थमाला में अब तक १५ ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है। तन्त्रसंग्रह के चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

१०. **लघु-ग्रन्थमाला**—सरस्वती-भवन तथा अन्यत्र उपलब्ध संस्कृत के छोटे-छोटे ग्रन्थों का इसमें प्रकाशन होता है। आरम्भ के १० ग्रन्थ केवल 'सारस्वती-सुषमा' के विभिन्न अङ्कों में ही उपलब्ध हैं। बाद के ग्रन्थों को पृथक् उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था विश्वविद्यालय बनने के बाद की गयी है। इसमें अब तक ३६ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

११. **भोट-चैनिक-ग्रन्थमाला**—इसमें तिब्बती एवं चीनी भाषा में उपलब्ध तथा मूल संस्कृत में अनुपलब्ध ग्रन्थों को संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित करने की योजना है।

१२. **म० म० श्रीशिवकुमारशास्त्री-ग्रन्थमाला**—इस ग्रन्थमाला में अब तक पाँच ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है।

१३. **जैन एवं आगमग्रन्थमाला**—इस ग्रन्थमाला का प्रवर्तन 'जैन एवं आगम' ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ किया गया है। अभी इस ग्रन्थमाला में मात्र एक ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

१४. **परिसंवाद-ग्रन्थमाला**—इस विश्वविद्यालय द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित परिसंवाद गोष्ठियों (सेमिनारों) में जो निबन्ध पढ़े जाते हैं और उनपर जो शास्त्रीय परिचर्चाएँ होती हैं—उन्हें 'परिसंवाद' नाम की ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया जाता है। अब तक 'परिसंवाद' के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

१५. **हस्तलिखित ग्रन्थों की विवरणात्मिका सूची**—सरस्वती भवन पुस्तकालय में संगृहीत ग्रन्थों की सूची तैयार कर दी गई है। वेद, उपनिषद्, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, गीता, स्तोत्र, तन्त्र, सांख्ययोग, मीमांसा, वेदान्त, वैशेषिकशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, जैन भक्तिसम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्प, सङ्गीत, नीति, धनुर्वेद, पञ्जी, प्रशस्ति, चित्र, देशीभाषा आदि विषयों की सूचियाँ प्रकाशित हो चुकीं हैं। अब तक इसमें १२ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं।

१६. **सारस्वती सुषमा**—यह संस्कृत-भाषा की त्रैमासिक अनुसन्धान पत्रिका है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् १९४२ में हुआ था। इसमें गवेषणात्मक निबन्धों के

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

अतिरिक्त अप्रकाशित लघु-ग्रन्थों का प्रकाशन भी होता है। अब तक इसके ३६ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इसका वार्षिक चन्दा १० रू० तथा प्रत्येक अङ्क का ३ रू० है। इसमें प्रकाशित लेखों की २५ प्रतिमुद्रित प्रतियाँ तथा पत्रिका की एक प्रति लेखक को प्रदान की जाती है। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी-भाषा की अनुसन्धान पत्रिकाओं के विनिमय में इसे भेजने की व्यवस्था है।

१७. **दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग**—म० म० बापूदेवशास्त्री द्वारा प्रवर्तित इस पञ्चाङ्ग का प्रचलन सन् १८३३ ई० में हुआ। १९५८ ई०में विश्वविद्यालय की स्थापना होने पर इसका प्रकाशन विश्वविद्यालय के द्वारा प्रारम्भ हुआ, और प्रतिवर्ष नियमित रूप से होता आ रहा है। दृग्गणित के आधार पर निर्मित यह पञ्चाङ्ग आज कल के प्रचलित पञ्चाङ्गों की तुलना में अधिक प्रामाणिक है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri
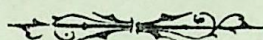
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय से
प्रकाशित ग्रंथों की

विस्तृत-सूची

[१]

सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला

१. *किरणावलीभास्कर:(वैशेषिक दर्शन) श्रीमदुदयनाचार्य द्वारा विरचित, सम्पादक—म० म० प० गोपीनाथ कविराज

२. *अद्वैतचिन्तामणि: (वेदान्त दर्शन) रङ्गोजीभट्ट विरचित ।
इस ग्रन्थ में अद्वैतवेदान्त के सिद्धान्तों का कारिकाओं तथा वृत्ति के माध्यम से स्पष्ट विवेचन है। वेदान्त के प्रमेयांश के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। अन्त में ग्रन्थ का विवरण है।

३. *वेदान्तकल्पलतिका (अद्वैतवेदान्त दर्शन) श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित सम्पादक एवं संशोधक प० रामाज्ञा पाण्डेय ।

४. *कुसुमाञ्जलिबोधिनी (न्याय) श्रीवरदराज विरचित--श्री·उदयनाचार्यकृत कुसुमाञ्जलि टीका ।

सम्पादक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

५. *रससार: (न्यायदर्शन) भट्टवादीन्द्र विरचित ।

सम्पादक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

यह किरणावली के गुणप्रकरण की टीका है। ग्रन्थ बुद्धिनिरूपण तक ही है। भाषा प्राञ्जल होने से विषय की गम्भीरता भी सरल हो जाती है। इसका रचना काल १३ वीं शती का मध्य अथवा १४ वीं शती का मध्य अथवा १४ वीं शती का आरम्भ माना जा सकता है। म० म० गोपीनाथ कविराज की अंग्रेजी भूमिका में विशद विचार हुआ है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*६. **भावनाविवेक** :(मीमांसादर्शन) भाग १—२, श्रीमण्डनमिश्र विरचित, भट्ट उम्वेककृत टीका सहित। सम्पादक—म०म० डॉ० गङ्गानाथ झा।

आकार डिमाई भाग १—पृष्ठ ७०

आकार डिमाई भाग २—पृष्ठ ६४

७. **योगिनीहृदयम्** (तन्त्रशास्त्र) [तृतीय संस्करण] अमृतानन्दयोगी कृत 'दीपिका', भास्करराय कृत 'सेतुबन्ध' टीकाओं सहित।

म०म० गोपीनाथ कविराज द्वारा सम्पादित।

आकार डिमाई, पक्की जिल्द, पृ० ४२० (१९७९) ३३-४०

यह वामकेश्वरतन्त्र का मुख्य ग्रन्थ है। नित्याषोडशिकार्णव से इसकी समानता है। तन्त्रशास्त्र का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है।

*८. **काव्यडाकिनी** (साहित्य) गङ्गानन्दकवीन्द्र रचित।

सम्पादक—होशिंगजगन्नाथ शास्त्री शर्मा।

इसमें ५ प्रकरणों में काव्यदोषों का विवेचन किया गया है। ग्रन्थकार ने उदाहरण तथा उन पर विवेचन नये ढ़ंङ्ग से किया है। प्राचीन ग्रन्थों में जो भी उदाहरण दिये गये हैं, उनका इसमें उल्लेख नहीं है। नवीन उदाहरण ही दिये गये हैं। इसकी रचना बीकानेर के महाराज कर्णसिंह के सभापण्डित ने की है। वे मैथिल विद्वान् थे। संवत् १७४८ में लिखी हुई इस पुस्तक की पाण्डुलिपि सरस्वती-भवन पुस्तकालय में उपलब्ध है।

*९. **भक्तिचन्द्रिका**-नारायणतीर्थ कृत। बलदेवोपाध्याय द्वारा सम्पादित।

आकार डिमाई, पृष्ठ ४१९ (१९६७ ई०)

यह शाण्डिल्य-भक्ति सूत्रों की उत्तम व्याख्या है। इसमें सूत्र भी मूल-रूप में मुद्रित हैं।

*१०. **सिद्धान्तरत्नम्** (गौडीयवैष्णव दर्शन) बलदेवविद्याभूषण द्वारा विरचित।

आकार डिमाई, प्रथम भाग पृ० १४८

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

प्रस्तावना लेखक एवं सम्पादक--म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।
आकार डिमाई, द्वि० भाग पृ० २३८
इस ग्रन्थ में वेदान्त के सभी मतों के निराकरण के साथ भगवान् के स्वरूप का निर्णय ८ पदों में किया गया है! विशेष रूप से विष्णु का सर्ववेद्यत्व सिद्ध करते हुए केवलाद्वैत मत का निराकरण किया गया है। यह अपने सिद्धान्त का प्रतिपादक ग्रन्थ है।

*११. **श्रीविद्यारत्नसूत्रम्** (तन्त्र) श्रीगौडपाद विरचित, शङ्करारण्य कृत टीकासहित। सम्पादक--पं० नारायणशास्त्री खिस्ते

*१२. **रसप्रदीपः** (साहित्य) प्रभाकरभट्ट विरचित।
सम्पादक—पं० नारायणशास्त्री खिस्ते।
पण्डितराज जगन्नाथ से पूर्व तथा प्रदीपकार के पश्चात् प्रकृत ग्रन्थकार ने रस के सम्बन्ध में सुन्दर निबन्ध रचा है। इसमें काव्य के लक्षण तथा रस के स्वरूप के विषय में मम्मट के पक्ष में विचार किया गया है। काव्य का लक्षण समस्त विचारकों की दृष्टि से देकर अपना सिद्धान्त-पक्ष प्रदर्शित किया है। ग्रन्थ की विचार-परम्परा दार्शनिक पद्धति की है। प्रत्येक साहित्यिक के लिये यह ग्रन्थ अवश्य सङ्ग्रहणीय है। इसके अध्ययन से रसगङ्गाधर के अध्ययन में सहायता प्राप्त होगी।

*१३. **सिद्धान्तसंग्रहः** (नाथमार्ग) श्रीबलभद्र विरचित।
सम्पादक--म० म० गोपीनाथ कविराज।

*१४. **त्रिवेणिका** (साहित्य) आशाधरभट्ट कृत।
सम्पादक—प्रो० वटुकनाथ शास्त्री एम्० ए०,
श्रीहोशिङ्ग जगन्नाथ शास्त्री साहित्योपाध्याय।
आकार डिमाई पृष्ठ ३०
कोविदानन्द के कर्ता आशाधरभट्ट ने इस ग्रन्थ में शक्ति, लक्षणा और व्यञ्जना वृत्तियों का विवेचन किया है। यह ग्रन्थ कोविदानन्द के बाद की रचना है तथा अनेक स्थानों पर कोविदानन्द का अविकल उद्धरण दिया है। ग्रन्थकार ने साहित्यदर्पण का उल्लेख किया है। अपने विषय में ग्रन्थकार ने नवीन दृष्टिकोण से विचार किया है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*१५. **त्रिपुरारहस्यम्** (तन्त्रशास्त्र) श्रीनिवासभट्ट विरचित तात्पर्यदीपिका सहित।

म० म० श्रीगोपीनाथ कविराज द्वारा सम्पादित।

इसमें सिद्धान्त की दृष्टि से प्रत्यभिज्ञादर्शन की भाँति भाषा तथा योगवासिष्ठ जैसी उत्कृष्टता है। सापेक्षतासिद्धान्त, जिसे आइन्स्टाइन महोदय की कल्पना कहा जाता है, इसके १२–१३ अध्यायों में वर्णित है।

*१६. **काव्यविलासः** (साहित्य) चिरञ्जीवि विरचित।

सम्पादक––प्रो० बटुकनाथ शास्त्री एम्० ए० एवं साहित्योपाध्याय होशिङ्ग जगन्नाथ शास्त्री।

इस ग्रन्थ में काव्यलक्षण, उसके कारण, रस और अलङ्कारों का दो प्रकरणों में विवेचन है। यद्यपि ग्रन्थकार ने काव्यप्रकाशकार के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थकार का नाम नहीं लिया है, तथापि पण्डितराज जगन्नाथ की तरह प्रतिभा को काव्य का कारण माना है।

*१७. **न्यायकलिका** (न्यायदर्शन) जयन्तभट्ट रचित।

सम्पादक—म० म० गङ्गानाथ झा।

इसमें गौतम के प्रथम सूत्र की व्याख्या की गई है, जिससे न्याय-दर्शन के सिद्धान्त का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे वैशेषिकदर्शन के ज्ञान के लिये तर्कसंग्रह प्रामाणिक ग्रन्थ है, वैसे ही गौतमदर्शन के ज्ञान लिये यह अत्यन्त उपादेय तथा प्रामाणिक ग्रन्थ है।

*१८. **गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः** (नाथमार्ग)।

सम्पादक––म० म० प० गोपीनाथ कविराज।

*१९. **प्राकृतप्रकाशः** (प्राकृत व्याकरण) वररुचि चिरचित। वसन्तराज कृत सञ्जीवनी, सदानन्द कृत सुबोधिनी टीका सहित।

सम्पादक––प्रो० बटुकनाथ एम्० ए० तथा श्रीबलदेव उपाध्याय।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*२०. **मांसतत्त्वविवेकः** (धर्मशास्त्र) विश्वनाथ भट्टाचार्य विरचित ।

प्राक्कथन लेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

सम्पादक—साहित्योपाध्याय होशिंग जगन्नाथ शास्त्री ।

इस ग्रन्थ में किन स्थितियों तथा किन लोगों को किन-किन जीवों का मांस खाना चाहिए अथवा नहीं इसका विशद विवेचन है। यह ग्रन्थ बौद्धों के उत्तररूप में विद्वान् ग्रन्थकार द्वारा लिखा गया है। न्याय-सिद्धान्तमुक्तावलीकार ही इस ग्रन्थ के कर्ता हैं।

*२१. **न्यायसिद्धान्तमाला** (न्यायदर्शन) जयराम न्यायपञ्चानन भट्टाचार्य रचित ।

सम्पादक—डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री एम्० ए०, डी० फिल् ।

इसमें सिद्धान्त प्रतिपादक गौतमसूत्रों की संक्षिप्त तथा उत्तम व्याख्या की गई है। अन्त में पदार्थ, गुण, द्रव्य, सम्बन्ध, आत्मा आदि के विषय में विभिन्न भारतीय दार्शनिकों के मत का संक्षिप्त निष्कर्ष प्रतिपादित है। ग्रन्थकार अपने समय के प्रख्यात विद्वान् हैं।

*२२. **धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी** (धर्मशास्त्र) शेषकृष्ण रचित, शेषराम रचित टीका युक्त ।

भूमिका लेखक एवं सम्पादक—नारायणशास्त्री खिस्ते ।

श्राद्ध में पिण्डदान, तर्पण आदि के सम्बन्ध में १४ श्लोकों की रचना की गयी है। इस लघु-निबन्ध में श्राद्धसम्बन्धी आचार का प्रामाणिक निर्णय है।

*२३. **नवरात्रप्रदीपः** (धर्मशास्त्र) नन्दपण्डितापरनामा विनायकधर्माधिकारी कृत ।

प्राक्कथन लेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

सम्पादक—प० बरकरे शास्त्री एवं बैजनाथ शास्त्री ।

नवरात्रव्रत तथा देवीपूजा की प्रक्रिया का इसमें प्रामाणिक वर्णन है।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*२४. **रामतापनीयोपनिषद्** (उपनिषद्) आनन्दवन कृत व्याख्या सहित।
प्राक्कथन लेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज,
सम्पादक—अनन्त शास्त्रिवेताल।
इसमें भगवान् राम को परब्रह्म कहा गया है और उनकी आराधना के प्रकार वर्णित हैं। अन्त में पूजन और धारण के यन्त्रचित्र संलग्न हैं। ग्रन्थ का सम्पादन पाठान्तरों तथा वर्णानुक्रमसूचियों से युक्त है।

*२५. **सापिण्डकल्पलतिका** (धर्मशास्त्र) आपदेवापरनामा सदाशिवदेव रचित, नारायणदेव कृत वृत्तिसहित।
सम्पादक—श्रीहोशिङ्ग जगन्नाथ शास्त्री।
विवाह तथा अशौच में सापिण्ड्य का विचार किया जाता है। इसका ठीक ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है। ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ में उनका संक्षिप्त तथा स्पष्ट विवेचन किया है। वृत्तिकार ने उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है। पच्चीस श्लोकों में ग्रन्थ पूर्ण है। अन्त में विषयसूची, प्रमाणभूत ग्रन्थों की नामानुक्रमसूची मुद्रित है।

*२६. **मृगाङ्करेखा** (नाटिका) विश्वनाथदेव रचित।
सम्पादक—नारायणशास्त्री खिस्ते। इसमें कलिङ्गाधिप कर्पूरतिलक कामरूपेश्वर की कन्या विलासवती के प्रेम-विवाह की कथा है। रत्नावली, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों के आधार पर इसका संविधान तैयार किया गया है। इसमें ४ अङ्क हैं।

*२७. **विद्वच्चरितपञ्चकम्** (इतिहास) नारायणशास्त्री खिस्ते द्वारा रचित।
भूमिका लेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।
विक्रम की १८वीं शती के अन्त तथा १९वीं शती के मध्य में भारत-प्रसिद्ध पांच विद्वानों का चरित चक्रपद्धति में लिखा गया है। प्रायः सभी गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज, वाराणसी के अध्यापक रहे हैं। आज भी इनकी शिष्यपरम्परा व्याकरण, न्याय और साहित्यशास्त्र में चल रही है। इनके नाम निम्नलिखित हैं—
१. गङ्गाधरशास्त्री मानवल्ली, २. कैलाशचन्द्रशिरोमणि,
३. दामोदरशास्त्री भारद्वाज, ४. म० म० शिवकुमारशास्त्री,
५. तात्याशास्त्री पटवर्धन।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*२८. **व्रतकोशः** (धर्मशास्त्र) जगन्नाथ शास्त्री होशिंग कृत ।
प्राक्कथन लेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।
दाक्षिणात्य एवं उदीच्य विद्वानों के प्रामाणिक निबन्धों के आधार पर इसकी रचना की गई है । आधारग्रन्थों का नाम तथा संकेत भी दिया गया है । इसके आधार पर व्रतों के सम्बन्ध में जानकारी निर्दिष्ट ग्रन्थ में उपलब्ध होगी । इस प्रकार का कोश धर्मशास्त्र, पुराण और तन्त्र ग्रन्थों के बनाने के उद्देश्य से यहाँ प्रथम भाग उल्लिखि है ; किन्तु यह कोश अपने में पूर्ण है ।

*२९. **वृत्तिदीपिका** (व्याकरणशास्त्र) मौनी श्रीकृष्णभट्ट रचित ।
सम्पादक—गङ्गाधरशास्त्री ।
ग्रन्थकार नागेशभट्ट से अर्वाचीन हैं । इसमें वैयाकरणों के मत को सिद्धान्त पक्ष कहा गया है । ग्रन्थकार ने लक्षणा वृत्ति नहीं मानी है तथा व्यञ्जना का समर्थन किया है । ग्रन्थ में कुल १० प्रकरण हैं—शक्ति, लक्षणा, व्यञ्जना, धात्वर्थ, तिङर्थ, सनाद्यर्थ समासशक्ति, स्त्री-प्रत्ययार्थ, तद्धितार्थ, स्फोट । इसमें बोपदेव तक के मत पर विचार किया गया है ।

*३०. **पदार्थमण्डनम्** (न्यायदर्शन) वेणीदत्त विरचित ।
सम्पादक —गोपालशास्त्री नेने ।
रघुनाथ शिरोमणि रचित 'पदार्थतत्त्वनिरूपणम्' ग्रन्थ के खण्डन में इसकी रचना है । ग्रन्थकार ने ५ पदार्थ ९ द्रव्य, २१ गुण, १ कर्म, २ अभाव तथा ६ धर्म मानें हैं । चित्ररूप के सदृश चित्रग्रन्थ एवं चित्ररस का भी समर्थन किया है । संक्षेपतः रघुनाथ शिरोमणि के स्वीकृत पदार्थों में से कुछ का समर्थन तथा कुछ का खण्डन किया गया है ।

*३१. **तन्त्ररत्नम्** १–५ भाग (मीमांसादर्शन) पार्थसारथि मिश्र विरचित ।
टी० रामचन्द्र दीक्षित एवं पी०एन्० पट्टाभिराम शास्त्री द्वारा सम्पादित ।

*आकार डिमाई, प्रथमभाग	पृष्ठ १५४		
* ,, ,, द्वितीयभाग	पृष्ठ १९४		
,, ,, तृतीयभाग (१९६३)	पृष्ठ ३६२,	कपड़े की जिल्द	५.५०
,, ,, चतुर्थभाग (१९७२)	पृष्ठ ९५४	,, ,,	१३.००
,, ,, पञ्चमभाग (१९७९)	पृष्ठ ३३८	,, ,,	४६.६०

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

इसमें मीमांसा सूत्रों पर पार्थसारथि मिश्र की व्याख्या है।
मीमांसा के एक प्रस्थान का यह प्रमुख ग्रन्थ है।

*३२. **तत्त्वसारः** (न्यायदर्शन) राखालदास रचित।

सम्पादक—हरिहर शास्त्री।

लेखक विक्रम की १९वीं शती के प्रारम्भ में वङ्गाल के महान् नैयायिक के रूप में प्रसिद्ध थे। प्रकृत ग्रन्थ में प्रायः १८ शंकाओं का समाधान है। इस पर अमर्ष व्यक्त करते हुए किसी ने तत्त्वसार विचार की रचना की। जिसका खण्डन सम्पादक ने यथास्थान किया है। ग्रन्थ नैयायिकों के लिये अत्यन्त संग्राह्य है।

*३३. **न्यायकौस्तुभः** (न्यायदर्शन) [प्रत्यक्षखण्ड]

लेखक—महादेव पुणतामकर।

द्वितीय भाग [अनुमानखण्ड]

आकार डिमाई—पृ० ५४८ (१९६७ ई०) १०.००

तृतीय भाग (मुद्र्यमाण)

यह तत्त्वचिन्तामणि, आलोक, दीधिति आदि प्रबन्धों के आधारपर लिखा गया है। इस भाग में मङ्गल-प्रामाण्य-प्रभा-सुवर्ण-तैजस-प्रत्यक्षकारण-मनः-समवाय-अभाव-सन्निकर्ष-निर्विकल्प-सविकल्प-संशय-विषमतावाद का विशद विवेचन है। ग्रन्थ मत-मतान्तरों की आलोचना की दृष्टि से लिखा गया है।

*३४. **अद्वैतविद्यातिलकम्** (वेदान्त) समरपुङ्गव दीक्षित कृत। धर्मय्य-दीक्षित कृत दर्पणसहित। गणपतिलाल झा एम्० ए० द्वारा सम्पादित। वेदान्त के प्रत्येक अधिकरण का सिद्धान्त एवं अर्थ एक ही श्लोक में प्रकाशित किया गया है। केवल द्वितीयाध्याय के तृतीयपाद में अंशाधिकरण तक ही मुद्रित है।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

***३५. धर्मविजयनाटकम्** (साहित्य) भूदेवशुक्ल रचित ।

सम्पादक--पं० नारायणशास्त्री खिस्ते ।

अकबर के वेतनाध्यक्ष केशवदास की प्रेरणा से किसी कश्मीरी पण्डित की यह रचना है । काशी पर अधर्म ने आक्रमण किया, किन्तु अन्त में धर्म की विजय हुई । नाटक में श्लोकों की भरमार है । श्लोक बड़े आकर्षक और प्रसादगुणयुक्त हैं ।

***३६. आनन्दकन्दचम्पूः** (काव्य) मित्रमिश्र कृत ।

सम्पादक--श्रीनन्दकिशोर शर्मा, साहित्याचार्य,

यह ओरछा नरेश धीरसिंह के राजपण्डित मित्रमिश्र की रचना है । १६०५ ई० इनका समय माना जाता है । इसमें भगवान् कृष्णचन्द्र का चरित अङ्कित है । भाषा अनुप्रासमय है ।

***३७. उपनिदानसूत्रम्** [छन्दः]

सम्पादक--डा० मङ्गलदेव शास्त्री ।

इसमें छन्दों का विवेचन है । ताण्डिन, ब्राह्मण, पिंगल, उक्थशास्त्र और निदान ये चार ग्रन्थ छन्दों के ज्ञान के लिए उत्तम हैं । इसमें आठ अध्याय हैं ।

***३८. किरणावलीप्रकाशदीधितिः** [न्यायदर्शन] रघुनाथशिरोमणि कृत ।

सम्पादक--पण्डित बद्रीनाथ शास्त्री ।

उदयनाचार्य की किरणावली पर वर्धमानोपाध्याय की 'प्रकाशटीका' अतिप्रशस्त है । उसी पर एक 'दीधिति' टीका है । इसमें विभागान्त गुणनिरूपण मुद्रित किया गया है ।

***३९. रामविजयमहाकाव्यम्** [काव्य] रूपनाथोपाध्याय रचित ।

सम्पादक—गणपतिलाल झा एम्० ए०

इस ग्रन्थ में रामचरित नव सर्गों में वर्णित है । इसकी रचना विक्रम की १६वीं शती का मध्य हो सकता है । इस पर सामान्यतः तुलसीदास की भी छाप दिखाई पड़ती है । इसमें वियोगिनी छन्द का अधिक प्रयोग है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*४०. **कालतत्त्वविवेचनम्** (धर्मशास्त्र) रघुनाथभट्ट द्वारा प्रणीत ।

सम्पादक--नन्दकिशोर शर्मा, प्राक्कथन लेखक म० म० पण्डित गोपीनाथ विराज ।

इसमें केवल काल के सम्बन्ध में विचार किया है । अभी ग्रन्थ पूरा मुद्रित नहीं है । श्राद्ध-प्रकरण का कुछ अंश भी इसमें आ गया है । ग्रन्थ अपने ढंग का अनूठा है ।

४१. **सिद्धान्तसार्वभौमः** (ज्यौतिषशास्त्र) मुनीश्वर विरचित ।

सम्पादक—श्रीमुरलीधरठक्कुर ज्यौतिषाचार्य ।

*आकार डिमाई प्र० भा०	पृष्ठ २१८	
*द्वि० भा०	पृष्ठ १७९	
तृ० भा० (१९७८)	३६१-६५७	३२.२०

यह सिद्धान्तज्यौतिष का ग्रन्थ है । इसके दो भाग त्रिप्रश्नाधिकार तक मुद्रित हैं । सूर्यसिद्धान्तपद्धति का पोषक ज्योतिषशास्त्र का यह महत्त्वपूर्ण अङ्ग है । ग्रन्थकार कमलाकरभट्ट के समकालिक विद्वान् हैं ।

*४२. **भेदसिद्धिः** [न्यायदर्शन] विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य रचित ।

सम्पादक पं० सूर्यनारायण शुक्ल ।

१५५६ शक संवत् में वङ्गाल में उत्पन्न ग्रन्थकार ने न्यायशास्त्र की श्रीवृद्धि की है । प्रकृत ग्रन्थ में अद्वैतवाद का साङ्गोपाङ्ग निराकरण करके भेद की सिद्धि की गई है । इसमें आत्मनानात्वसिद्धि तथा अनिर्वचनीयवाद, निर्गुणवाद, अवच्छेदवाद, प्रतिबिम्बवाद का खण्डन है । ग्रन्थ का केवल प्रथम परिच्छेद ही उपलब्ध है ।

*४३. **स्मार्तोल्लासः**—१-३ भाग । [धर्मशास्त्र] शिवप्रसाद पाठक कृत ।

सम्पादक—स्व० भगवत्प्रसाद मिश्र वेदाचार्य ।

आवसथ्याग्निसाध्य शुक्लयजुःगृह्यकर्म का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया गया है । पारस्करगृह्यसूत्र के आधार पर इसकी रचना की गयी है । इसमें अन्य पद्धतियों से वैशिष्ट्य यह है कि शास्त्रीय आलोचना के साथ सिद्धान्त का प्रतिपादन भी है । ग्रन्थ भाषा तथा विषय की दृष्टि से उत्तम है ।

---

*ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*४४. **शूद्राचारशिरोमणिः** (धर्मशास्त्र) शेषकृष्ण रचित ।

सम्पादक—नारायण शास्त्री खिस्ते ।

इसमें शूद्रों की उत्पत्ति, उनके कर्म का विचार एवं आचार, संस्कार तथा व्यवहार का सुन्दर विवेचन है । पौरोहित्य करनेवाले विद्वानों के लिये यह ग्रन्थ परमोपयोगी है ।

*४५. **किरणावलीप्रकाशः** (न्यायदर्शन) गुणनिरूपण । वर्धमानोपाध्याय कृत ।

सम्पादक पं० बद्रीनाथ शास्त्री एम्० ए० ।

प्राक्कथन लेखक म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

न्यायविषयक यह ग्रंथ उदयनाचार्य की किरणावली की टीका है। इस पर रघुनाथ शिरोमणि की 'दीधिति' टीका भी पृथक् प्रकाशित की गयी है ।

४६. **काव्यप्रकाशः** (साहित्यशास्त्र) मम्मटाचार्य रचित, चण्डीदासकृत दीपिका टीका सहित ।

काव्यप्रकाश पर अनेक टीकाएँ हैं, जिनमें दीपिका का बड़ा महत्त्व है । दर्पणकार के प्रपितामह के तुल्य इस विद्वान् ने काव्यप्रकाश पर विचार किया है जिससे परवर्ती टीकाकार उनका स्मरण करते हैं ।

*प्रथम भाग, आकार डिमाई			पृष्ठ १३६	
द्वितीय भाग	"	(१९६५)	पृष्ठ ६०	१.५०
तृतीय भाग	"	(१९६५)	पृष्ठ ५७०, पक्की जिल्द	१०.००

*४७. **भेदजयश्रीः** (माध्ववेदान्त) वेणीदत्त तर्कवागीश कृत ।

सम्पादक पं० त्रिभुवनप्रसाद उपाध्याय, व्याकरणाचार्य ।

आकार डिमाई पृष्ठ १२ + ७२ + १०

अद्वैतवाद का निराकरण करके मध्वसम्प्रदाय के अनुसार ब्रह्म, जीव और प्रधानरूप त्रित्ववाद का इस ग्रन्थ में प्रतिपादन है । ग्रन्थ की भाषा प्रवाहयुक्त है ।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

प्रसादमयी भाषा विषयग्रहण में सहायक है। मध्वसम्प्रदाय के सिद्धान्त परिचय के लिये यह ग्रन्थ परम उपयोगी है।

*४८. **सम्यक्सम्बुद्धभाषितं प्रतिमालक्षणम्** (शिल्पशास्त्र)

सम्पादक--श्रीहरिदास मित्र।

*४९. **भेदरत्नम्** [न्यायदर्शन] शङ्करमिश्र कृत।

सम्पादक--पं० सूर्यनारायण शुक्ल

इसके रचयिता शङ्कर मिश्र प्रख्यात नैयायिक हैं। इसमें अद्वैतवाद का खण्डन करके भेद सिद्ध किया गया है। इसका खण्डन मल्लनाराध्याचार्य ने 'अद्वैतरत्नम्' में और मधुसूदन सरस्वती ने 'अद्वैतरत्नरक्षण' ग्रन्थ में किया है। इसके समर्थन में अद्वैतरत्नपरीक्षा ग्रन्थ की रचना प० सूर्यनारायण शुक्ल ने की है, जो इसके साथ ही मुद्रित है।

*५०. **मातृकाचक्रविवेकः** [तन्त्रशास्त्र] स्वतन्त्रानन्दनाथ रचित।

शिवानन्द कृत व्याख्यासहित। प्राक्कथन लेखक म० म० पं० गोपीनाथ कविराज एवं सम्पादक—ललिताप्रसाद डबराल, व्याकरणाचार्य।

महाशक्ति त्रिपुरसुन्दरी के स्वरूप विवेक के लिए इस ग्रन्थ की रचना हुई है। इसमें ५ खण्ड हैं। जैसे—१. तात्पर्यविवेकः, २. सुषुप्तिविवेकः, ३. स्वप्नविवेकः, ४. जाग्रद्विवेकः, ५. तुर्यविवेकः। भूमिका में ग्रन्थ का सारांश समाहित है।

*५१. [अ] **अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम्** [वेदान्त]

श्रीब्रह्मानन्दसरस्वती विरचित।

*५२. [ब] **नृसिंहविज्ञापनम्** [वेदान्त] श्रीनृसिंहाश्रम विरचित।

सम्पादक—प० सूर्यनारायण शुक्ल।

* 'अ' तथा 'ब' संख्यक ग्रन्थ एक में ही सम्पादित हैं।

*५३. **नृसिंहप्रसादः** [व्यवहारसार] (धर्मशास्त्र) दलपतिराज विरचित।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

सम्पादक—विनायकशास्त्री टिक्नु ।

इसमें विवादग्रस्त विषयों पर न्याय करने की विधि का विवेचन है। इसके लिये न्याय के स्थान कितने है, क्या करणीय हैं, क्या अकरणीय है ? इस प्रक्रिया से अपराधभेद, दण्डभेद की व्यवस्था है ।

५४. *नृसिंहप्रसादः [प्रायश्चित्तसार] (धर्मशास्त्र) दलपति महाराज कृत ।

सम्पादक—नन्दकिशोर शर्मा साहित्याचार्य ।

इसमें प्रायश्चित्तीय कर्म, स्थिति तथा उसकी विधि का विशेष रूप से विवेचन है । ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है ।

५५. *नृसिंहप्रसादः [श्राद्धसार] (धर्मशास्त्र) दलपति महाराज कृत ।

सम्पादक—विद्याधर मिश्र ।

ग्रन्थ के १२ खण्डों में से इसमें श्राद्ध का अर्थ, उपयोग, विधि, एवं अधिकारी आदि का सप्रमाण विवेचन है ।

५६ *भगवन्नाममाहात्म्यसङ्ग्रहः [भक्तिशास्त्र] रघुनाथेन्द्रयति कृत ।

सम्पादक एवं टीकाकार पं० अनन्तशास्त्री फडके ।

इसमें भगवन्नाम की महिमा पर विद्वानों तथा ऋषियों के मत, राम, कृष्ण, शिवनामों के महत्त्व, इनके जपसे फलप्राप्ति आदि का विशद विवेचन है तथा पाठभेद, उद्धरण आदि संकेतों से युक्त है ।

५७ *गणितकौमुदी [गणित] नारायणपण्डित कृत ।

सम्पादक—पं० पद्माकर द्विवेदी ।

गणितशास्त्र का यह प्रामाणिक ग्रन्थ दो भागों में मुद्रित है। इसका प्रथम भाग श्रेणी व्यवहार विषय तक है। यह १३वीं शती शक सं० की रचना है। गणित के छात्रों के लिए यह ग्रन्थ परम उपयोयी है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

५८. ***ख्यातिवाद** : [दर्शन] शङ्करचैतन्य भारती रचित ।

प्राक्कथनलेखक म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

इसमें ख्याति के सम्बन्ध में समान दार्शनिकों के मतों का विवेचन है और वेदान्त के विभिन्न मतों का सिद्धान्त रूपमें समर्थन किया गया है तथा अनिर्वचनीयख्याति में उद्भावित गौरव का समाधान करके निम्बार्क तथा रामानुजपक्ष का खण्डन भी वर्णित है। यह ग्रन्थ दर्शन का है; फिर भी प्राञ्जल भाषा ने इसे बोधगम्य बना दिया है ।

५९. ***साङ्ख्यतत्त्वालोकः** [सांख्यदर्शन] स्वामी हरिहरानन्दारण्य रचित ।

प्राक्कथनलेखक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

सम्पादक—ज्ञानेश्वर घोष ।

यह सांख्यसिद्धान्त का प्रतिपादक निबन्धग्रन्थ है। इसमें सांख्य के समग्र सिद्धान्त क्रम से प्रतिपादित हैं। शास्त्र के रहस्य ज्ञान के लिए ग्रन्थ परम उपयोगी है ।

६०. ***शाण्डिल्यसंहिता** [भक्तिशास्त्र] प्रथम भाग महर्षि शाण्डिल्य कृत ।

सम्पादक—अनन्तशास्त्री फडके ।

इसमें धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष और भक्ति नाम के पांच खण्ड हैं। यह वैष्णव सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसमें केवल भक्ति खण्ड है। अन्य अभी उपलब्ध नहीं हैं।

६१. ***दक्षिणामूर्तिसंहिता** [तन्त्र] ।

सम्पादक—पण्डितनारायण शास्त्री खिस्ते ।

६२. ***नृसिंहप्रसादः** (तीर्थसार) [धर्मशास्त्र] दलपति महाराज विरचित ।

सम्पादक—पं० सूर्यनारायण शुक्ल ।

यह ग्रन्थ तीर्थव्यवहार, प्रायश्चित्तसार, श्राद्धसार आदि नाम से १० खण्डों में रचित है। इसमें दक्षिण भारत के १५ तीर्थों का वर्णन है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

६३. ***भक्त्यधिकरणमाला** (भक्तिशास्त्र) नारायणतीर्थस्वामि कृत ।

सम्पादक एवं टीकाकार—अनन्तशास्त्री फडके ।

महर्षि शाण्डिल्य रचित सूत्रों की व्याख्या के रूप में इस ग्रन्थ की रचना है । इसमें अनन्तशास्त्री फडके की टीका भी मुद्रित है । ग्रन्थकार ने भक्तिचन्द्रिका में जिन अंशों पर गम्भीर विचार नहीं किया है, उनपर भी मार्मिक विवेचन है । ग्रन्थ का प्रथम भाग मात्र ही मुद्रित है ।

६४. ***वसिष्ठदर्शनम्** (दर्शन) आत्रेय भीखनलाल सङ्कलित ।

योगवासिष्ठ तथा महारामायण से इस ग्रन्थ के सिद्धान्त संकलित हैं ।

६५. ***त्रिस्थलीसेतुः** [धर्मशास्त्र] भट्टोजीदीक्षित कृत ।

इसमें तीर्थविधि का सामान्यतः वर्णन करके काशी, प्रयाग, गया आदि तीर्थों की विशेष महिमा वर्णित है ।

६६. ***तीर्थेन्दुशेखरः** (धर्मशास्त्र) नागेशभट्ट कृत ।

इसमें तीर्थों के अधिकारी आदि के निर्णय के अनन्तर प्रयाग, काशी तथा गया आदि तीर्थों की विधि का विचार है ।

६७. ***काशीमृतिमोक्षविचारः** (धर्मशास्त्र) सुरेश्वराचार्य कृत ।

सम्पादक—पं० सूर्यनारायण शुक्ल ।

इसमें काशी, वाराणसी, अतिमुक्त, अन्तर्गृह नाम के चार क्षेत्रों के परिमाण का निर्णय किया गया है तथा उन-उन क्षेत्रों में मृत्यु होने से सारूप्य, सालोक्य, सायुज्य, सान्निध्यरूप मुक्तियों के मिलने का विधान है ।

६५, ६६, ६७ संख्या के ग्रन्थ एक में ही निबन्धित हैं ।

६८. ***मध्वमुखालङ्कारः** (वेदान्त) वनमालिमिश्र रचित ।

सम्पादक—श्रीनृसिंहाचार्य वरखेड़कर ।

प्राक्कथनलेखक म० म० पं० गोपीनाथ कविराज ।

इसमें मध्वाचार्य को वायु का अवतार तथा उनके शास्त्र को सच्छास्त्र सिद्ध करने के पश्चात् ब्रह्मसूत्र की चतुःसूत्री पर गम्भीर विचार करके शेष सूत्रों का तात्पर्य सङ्कलित किया गया है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

६९. ***संक्षेपशारीरकम्** [वेदान्त] सर्वज्ञमुनि रचित। नृसिंहाश्रम कृत तत्त्वबोधिनी टीका सहित।

सम्पादक—सूर्यनारायण शुक्ल।

यह वेदान्त का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। १६वीं शती में इस पर तत्त्वबोधिनी टीका रची गई और १९३६ में प्रथम बार मुद्रित हुई।

७० ***भास्करी** (शैवदर्शन) ईश्वरप्रत्यभिज्ञानविमर्शिनी व्याख्या, अभिनव-गुप्तपाद एवं भास्कर कृत टीका सहित।

उत्पलदेवकृत ईश्वरप्रत्यभिज्ञा के साथ दोनों टीकाएँ मुद्रित हैं। यह ग्रन्थ प्रथमद्वितीय भाग में मुद्रित है। तीसरे भाग में अंग्रेजी में ग्रन्थ की समालोचना है। यह शैवदर्शन का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

७१. ***भक्तिनिर्णयः** (भक्तिशास्त्र) अनन्तदर्शन रचित।

सम्पादक—अनन्तशास्त्री फडके।

इसमें दो प्रकरण हैं। प्रथम में भजन, संकीर्तन, सेवा, श्रवण, मोक्ष-साधन का प्रतिपादन है। दूसरे में भक्ति और ज्ञान का समुच्चय, शिव-विष्णु में अभेद, अजामिलोपाख्यान, प्रायश्चित्त और नामोच्चारण के लिये अधिकारिभेद का सुन्दर विवेचन है।

७२. ***नाममाहात्म्यम्** (भक्तिशास्त्र) आश्रमस्वर्ग कृत।

सम्पादक—पं० अनन्तशास्त्री फडके।

ग्रन्थकार के वैष्णवकण्ठाभरण का यह एक प्रकरण है। पूरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं है। केवल यही भाग मिल सका है। इस ग्रन्थ के अनुसार अर्थज्ञान के बिना भी नाम जपनेवाला मनुष्य परमकल्याण प्राप्त करता है।

७१, ७२ सङ्ख्यक ग्रन्थ एक साथ निबन्धित हैं।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

*७३. **उपेन्द्रविज्ञानसूत्रम्** [वेदान्तदर्शन] उपेन्द्रदत्तशर्मा विरचित स्वोपज्ञ टीकासहित।

सम्पादक—डा० मंगलदेव शास्त्री।

यह ग्रन्थ वेदान्तसिद्धान्तज्ञान में परम उपयोगी है। स्वामी भास्करानन्द के शिष्य अनन्तराम मिश्र के शिष्य उपेन्द्रदत्त ने इस ग्रन्थ की रचना की है। म० म० पं० गोपीनाथ कविराज तथा डॉ० मंगलदेव शास्त्री द्वारा विशद भूमिका से युक्त यह ग्रन्थ संग्रहणीय है।

७४. **आश्वलायनश्रौतसूत्रम्** (वेदः) सिद्धान्तिभाष्य सहित।

सम्पादक—डा० मङ्गलदेव शास्त्री।

*प्र० भा०	आकार डिमाई	पृष्ठ १२५	
द्वि० भा०	,, ,,	पृष्ठ २३२	४.००

यह ग्रन्थ वैदिक यज्ञों का प्रतिपादक है। इसमें केवल दो अध्याय हैं।

७५. ***द्वैतनिर्णयसिद्धान्तसङ्ग्रहः** (धर्मशास्त्र) भानुभट्ट प्रणीत।

सम्पादक—सूर्यनारायण शुक्ल।

द्वैतनिर्णय नाम के तीन ग्रन्थों में से यह शङ्करभट्ट कृत सारसंग्रह है। इसमें व्रत, पर्व, अशौच, श्राद्ध, होम, तीर्थयात्रा, मांसभक्षण, दान, प्रायश्चित्त आदि का निर्णय है। धर्मशास्त्र की उपयोगी जानकारी के लिए पुस्तक संग्राह्य है।

७६. ***मनोऽनुरञ्जननाटकम्** (साहित्य) अनन्तदेव रचित।

सम्पादक—अनन्तशास्त्री फडके।

इसमें गोवर्धनपूजा तथा चीरहरणलीला का वर्णन है। पाँच अङ्कों का यह नाटक आपदेव के पुत्र की कृति है। यह ईसा की १५वीं शती के आरम्भ की रचना है। इसमें भक्ति का उत्तम परिपोष किया गया है। नाटक की भाषा बड़ी मोहक तथा प्रसादगुण युक्त है।

७७. ***सुभद्रापरिणयः** (साहित्य) व्यास श्री रामदेवकवि कृत।

सम्पादक—नारायणशास्त्री खिस्ते।

यह छायानाटक के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें एक ही अङ्क है। सुभद्रा और अर्जुन के प्रेम का वर्णन, उसका अपहरण, यादवों का युद्धोद्योग और कृष्ण के अनुरोध पर विवाह, इसकी कथावस्तु है। संस्कृत साहित्य में ऐसे नाटक कम ही हैं।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

७८ *तत्त्वचिन्तामणिः—[प्रत्यक्षखण्डे, मङ्गलवादः] (न्यायदर्शन)

गङ्गेशोपाध्याय रचित। प्रगल्भरचित प्रगल्भ्या, महेशठक्कुर रचित आलोकदर्पण, मधुसूदन रचित आलोककण्टकोद्धार, पक्षधरोपनामक जयदेव-रचित आलोक, सूर्यनारायण शुक्ल रचित मिताक्षरा से विभूषित है।

सम्पादक—प० सूर्यनारायण शुक्ल

यह नव्यन्यायशास्त्र का आदि ग्रन्थ है। इसमें मैथिलसम्प्रदाय की प्रसिद्ध टीकाओं का संग्रह है। बंगाली सम्प्रदाय के आक्षेपों का सुन्दर समाधान है। दोनों सम्प्रदाय के ग्रन्थों के मुद्रण का उपक्रम विश्वविद्यालय के विचाराधीन है।

७९. *तौतातिकमततिलकम्, [१–२ भाग] (मीमांसा) भवदेव रचित। श्रीचिन्नस्वामी तथा प० पट्टाभिरामशास्त्री द्वारा सम्पादित।

मीमांसादर्शन का यह ग्रन्थ कुमारिलभट्ट के सिद्धान्त का पोषक है।

८०. *चलराशिकलनम् (गणित) सुधाकर द्विवेदी द्वारा रचित।

सम्पादक—–प० बलदेव मिश्र।

यह गणितशास्त्र का ग्रन्थ है। ग्रन्थकार ने आधुनिक और प्राचीन गणित के तुलनात्मक विवेचन के साथ ग्रन्थ की हिन्दी में रचना की है। यह अपने विषय की बहुमूल्य रचना है।

८१ *दशपाद्युणादिवृत्तिः (व्याकरण) लेखक का नाम अज्ञात।

यह उणादि के सूत्र शाकटायन प्रणीत पंचपादी से विलक्षण वृत्ति है। इसमें सूत्र भी नये हैं तथा वृत्ति उत्तम है। प्रत्ययों के अधिकार अनुबन्ध पाणिनि के अनुकूल हैं।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

८२. ***विक्रमाङ्कदेवचरितमहाकाव्यम्*** (काव्य) श्री बिल्हण विरचित ।

सम्पादक—मुरारीलाल नागर शास्त्री ।

८३. ***भास्करी*** (शैवदर्शन) [द्वितीय भाग] अभिनवगुप्तपाद तथा भास्कर विरचित टीकासहित ।

सम्पादक—प्रो०ओ० के० सुब्रह्मण्य अय्यर एवं डा० के० सी० पाण्डेय ।

८४. ***भास्करी*** (शैवदर्शन) [तृतीय भाग] अभिनवगुप्तपाद तथा भास्कर कृत टीकासहित ।

सम्पादक—डा० के० सी० पाण्डेय ।

८५. **धर्मशास्त्रीयव्यवस्थापत्रसङ्ग्रहः** (धर्मशास्त्र)

सम्पादक-डा० सुभद्र झा ।

आकार डिमाई (१९५७) पृष्ठ ७८०, कपड़े की जिल्द, १०.००

इसमें न्यायालय में उपस्थित वादों पर श्रीवैद्यनाथ मिश्र तथा अन्य विद्वानों द्वारा दी गई व्यवस्था का संग्रह है। यह संग्रह वकीलों तथा धर्मशास्त्रीय व्यवस्था लिखनेवाले विद्वानों के लिए संग्रहणीय है। अंग्रेजी राज्य में न्यायव्यवस्था के इतिहास पर इस ग्रन्थ द्वारा प्रकाश पड़ता है।

८६. **गर्गसंहिता** (पुराण) ।

श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित ।

आकार रायल प्र० भा० (१९५६) पृष्ठ ६६८, कपड़े की जिल्द १०.००

इसमें १—गोलोकखण्ड, २—वृन्दावनखण्ड ३—गिरिराजखण्ड, ४—माधुर्यखण्ड, ५—मथुराखण्ड, ६—द्वारकाखण्ड आदि छः खण्ड हैं। यह ग्रन्थ श्रीमद्भागवत का पूरक माना जाता है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

८७. *बृहच्छब्देन्दुशेखरः (व्याकरण) नागेशभट्ट रचित [१–३ भाग]।
सम्पादक—डा० सीताराम शास्त्री।
यह वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी का प्रौढ़ टीका ग्रन्थ है। यही लघुशब्देन्दु-शेखर का आधार है। यह प्रथम संस्करण है।

८८. *पदवाक्यरत्नाकरः (न्यायशास्त्र) गोकुलनाथोपाध्याय विरचित यदुनाथमिश्र कृत गूढार्थदीपिकायुक्त।
सम्पादक—श्रीनन्दिनाथ मिश्र।
यह न्यायशास्त्र के शब्दखण्ड का ग्रन्थ है। इसमें २३ प्रकरण हैं तथा १६७ कारिकाएँ हैं। शब्दशक्तिप्रकाशिका की भाँति इसमें शब्द, पद, पदार्थ, सम्बन्ध तथा कारक का न्यायमत से विचार किया गया है। शब्दशक्तिप्रकाशिका की अपेक्षा इसकी विशेषता है—स्फोट के सम्बन्ध में गम्भीर विचार और पाणिनीय सूत्रों का आश्रयण।

८९. *काव्यप्रकाशः—[१–५ उल्लास] (अलङ्कारशास्त्र)। आचार्यमम्मट कृत, गोकुलनाथोपाध्याय रचित काव्यप्रकाशविवरण युक्त।
सम्पादक—कविशेखर बदरीनाथ झा।
यह काव्यप्रकाश की प्रथम दार्शनिक टीका है। मात्र १–५ उल्लास तक ही यह टीका उपलब्ध हो सकी है।

९०. *तारिणीपारिजातः (तन्त्र) विद्वदुपाध्याय विरचित।
सम्पादक—रमानाथ झा शर्मा
आकार डिमाई (१९६१) पृष्ठ १४४, कपड़े की जिल्द, ४.००
तारादेवी की उपासना का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है।

९१. वाक्यपदीयम्—प्रथमकाण्डम् [द्वितीय संस्करण] (व्याकरण) आचार्य-भर्तृहरि विरचित, पुण्यराज कृत विवरण तथा रघुनाथ शर्मा कृत अम्बाकर्त्री टीकासहित।
सम्पापक—पं० रघुनाथ शर्मा।
आकार रायल (१९७६) पृष्ठ २३५, कपड़े की जिल्द, २६.५०

---

*ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

,, ,, द्वितीयकाण्डम् [द्वि०सं०] (१९८०) पृ० ५९१, कपड़े की जिल्द, २८.००

,, ,, तृतीयकाण्डम् [प्र० भाग] (१९७४) पृ० ३४२ ,, ,, २५.००

,, ,, तृतीयकाण्डम् [द्वितीय भाग] पृ० ७६२ ,, ,, १०७.००

,, ,, तृतीयकाण्डम् [तृतीय भाग] पृ० ६८२ ,, ,, ६५.५०

इस ग्रन्थ में वाक्यार्थ के सम्बन्ध में आठ पक्षों को उपस्थापित करके वाक्य और वाक्यार्थ के सम्बन्ध में वैयाकरणमत विवेचित है। इस ग्रन्थ में प्रामणिक स्वोपज्ञ टीका भी है।

वाक्यपदीय का तृतीयकाण्ड प्रकीर्णकाण्ड के नाम से ख्यात है। इसमें जाति, द्रव्य, सम्बन्ध, भूयोद्रव्य, गुण, दिक्, साधन, क्रिया, काल, पुरुष, संख्या, उपग्रह, लिङ्ग और वृत्तिसमुद्देश चौदह प्रकरण हैं। यह काण्ड तीन भागों में प्रकाशित किया गया है।

९२. **सूक्तिमुक्तावली** (गद्यकाव्य) गोकुलनाथोपाध्याय विरचित।

सम्पादक—स्व० भूपनारायण झा।

आकार रायल (१९६३) पृष्ठ १४८, कपड़े की जिल्द, ७.५०

यह गद्यकाव्य है। इसमें ७ आख्यायिकाएँ हैं। इसकी भाषा प्रवाहयुक्त है। इसका मुख्य रस विप्रलम्भ श्रृङ्गार है।

९३. **'न च' रत्नमालिका** (न्यायदर्शन) श्रीशास्त्रीशर्मा रचित स्वोपज्ञ-नूतनालोक सहित। सी० के० रामन्-नम्पियार, टी० रामवारियर्, के० अच्युतप्योतुवाल् रचित आलोकप्रकाश सहित।

आकार रायल (१९६५) पृष्ठ २१८, कपड़े की जिल्द, ६.५०

इसमें तीन आवलियाँ हैं। प्रथम आवलीमें १९ 'न च' द्वारा सामान्य-धर्मावच्छिन्न आधारत्व और आधेयत्व की अतिरिक्तता सिद्ध की गयी है। द्वितीय आवलीमें २५ 'न च' द्वारा हेत्वधिकरणनिष्ठत्व का स्वरूप-विचार है। तृतीय आवलीमें ५४ 'न च' द्वारा प्रतिबन्धकत्व का विचार है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

९४. **श्रीमद्भगवद्गीता** (१-६ अध्याय) भगवद्भास्करभाष्य सहित ।
सम्पादक—डा० सुभद्रा झा ।
आकार डिमाई, (१९६५) पृष्ठ २५६, कपड़े की जिल्द, ५.५०
यह भाष्य निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुसार लिखा गया है । यद्यपि यह पूर्णरूपेण उपलब्ध नहीं है,तथापि टीकाकार के महनीय विचार विचारकों के लिए परम उपयोगी हैं ।

९५. **पारसीकप्रकाशः** (कोश) विहारीकृष्णदास रचित ।
सम्पादक—पं० विभूतिभूषण भट्टाचार्य ।
आकार डिमाई (१९६५) पृष्ठ २१४, कपड़े की जिल्द, ५.५०
यह पारसी-संस्कृत-अंग्रेजी शब्दों का कोश है । इसमें व्याकरणभाग तथा शब्दसूची भी संलग्न है । व्याकरणभाग की रचना ग्रन्थकार की ही है ।

९६. **हयत** (अरबीयसिद्धान्तज्यौतिष) ।
सम्पादक—विभूतिभूषण भट्टाचार्य ।
आकार डिमाई (१९६७) पृष्ठ १८६, कपड़े की जिल्द ६.००
यह ग्रन्थ अरबीभाषा के एक ग्रन्थ का अनुवाद है । ग्रन्थकार ने संज्ञा-नामों में परिवर्तन नहीं किया है । इसमें ग्रहगणित, भूगोलपिण्ड तथा रेखागणित का समुचित विवेचन है ।

९७. **बृहत्संहिता** (ज्यौतिषशास्त्र) वराहमिहिराचार्य कृत । भट्टोत्पल कृत विवृतिसहित ।
सम्पादक—स्व० अवधविहारी त्रिपाठी ।
आकार रायल, (१९६८), पृ० ५६६, कपड़े की जिल्द, प्र० भाग—१८.००
" " , (१९६८), पृ० ५६७-१२६६, " " द्वि० भाग—२०.००
इसके प्रथमभाग के ५६६ पृष्ठों में उपनयन से पिटक लक्षण तक ५१ अध्याय हैं । फलितज्योतिष का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है । सुधाकर द्विवेदी के बाद स्व० अवधविहारी त्रिपाठी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी बन गया है । इसका द्वितीयभाग वास्तुविद्या से १०६ अध्यायों में प्रतिमा से जातक, गोचर, पुरुष, स्त्री, पशुलक्षण आदि विषयों से सज्जित प्रत्येक विद्वान् के लिए संग्राह्य है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

९८. **स्कन्दशारीरकम्** (ज्योतिषशास्त्र)

सम्पादक—श्रीगणेशदत्त पाठक ।

आकार डिमाई (१९६८), पृष्ठ ४००, कपड़े की जिल्द १५.००

इसके प्रथम अध्याय में रेखाओं की संज्ञाएँ वर्णित हैं, शेष में लक्षण और फल है। यह ग्रन्थ सामुद्रिकशास्त्र का है। इस पर संस्कृत टीका पर्याप्त सहायता करती है।

९९. **द्वैतपरिशिष्टम्** (धर्मशास्त्रीयमैथिलनिबन्धरूपम्) श्रीकेशव मिश्र द्वारा विरचित । सम्पादक—पं० श्रीदुर्गाधर झा ।

आकार रायल (१९७२) पृष्ठ १८४, कपड़े की जिल्द ८.००

१००. **लघुकाशिका** (व्याकरण) ।

लेखक एवं सम्पादक—श्रीसुदर्शनाचार्य त्रिपाठी ।

पूर्वार्ध—आकार रायल (१७७३) पृष्ठ २७६, कपड़े की जिल्द १९.२५

उत्तरार्ध— ,, (१९७४) ,, ३१६ ,, ,, १९.००

यह ग्रन्थ काशिका का लघुरूप है। इसमें काशिका के उदाहरणाधिक्य को संक्षिप्त करके उपादेय बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। इसमें बहुत ही सरल प्रकार से प्रयोगों की सिद्धि की गयी है।

१०१. **पाणिनीयप्रबोधः** (व्याकरण) श्रीगोपालशास्त्री दर्शनकेशरी कृत ।

आकार डबल क्राउन, (१९७०) पृष्ठ ३१२, कपड़े की जिल्द, ४.५०

इसमें अति संक्षिप्त पाणिनीयव्याकरण का संग्रह है। यह लघुसिद्धान्त-कौमुदी के विकल्प में रचा गया है। इसमें सूत्र से ही सूत्रार्थ निकालने की प्रक्रिया का अवलम्बन किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१०२. *प्राकृतप्रकाशः (प्राकृतव्याकरण) श्रीवररुचि विरचित (परिवर्धित संस्करण) ।

सम्पादक—आचार्य श्रीबलदेव उपाध्याय ।

यह ग्रन्थ संजीवनी, सुबोधिनी, मनोरमा, तथा प्राकृतमञ्जरी नामक चार टीकाओं से युक्त है तथा सम्पादक की हिन्दी टीका भी साथ में प्रकाशित है ।

१०३. कल्किपुराणम् (पुराण)

सम्पादक—डा० अशोकचटर्जी शास्त्री

आकार रायल (१९७२) पृष्ठ २७६, कपड़े की जिल्द, १८.००

यद्यपि उपपुराणों में अन्यतम कल्किपुराण का प्रकाशन अनेक बार कलकत्ता तथा वाराणसी से हो चुका है, तथापि अनेक हस्तलेखों तथा प्रकाशित संस्करणों से पाठभेद मिलान कर इस पुराण का प्रस्तुत समालोचनात्मक संस्करण सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया है । परिशिष्ट में समीक्षण, पुराणगत विशिष्ट शब्दों की सूची तथा श्लोकानुक्रमणिका संलग्न है । ग्रन्थमाला के पर्यवेक्षक 'वागीश शास्त्री' की आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका से प्रस्तुत संस्करण और भी उपादेय बन गया है ।

१०४. उकरा (गणित) पारसी से संस्कृतभाषा में अनूदित ।

सावजूसयूस द्वारा विरचित ।

सम्पादक—श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ।

आकार रायल (१९७८) पृष्ठ ५५, कपड़े की जिल्द २९.००

इस ग्रन्थ में ३ अध्याय हैं । लगभग ६५ रेखाचित्रों से यह ग्रन्थ समन्वित है । इस ग्रन्थ में दुरूह विषयों को चित्रों द्वारा समझाया गया है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१०५. **नानकचन्द्रोदयमहाकाव्यम्** (काव्य) श्रीदेवराजशर्मा विरचित ।

सम्पादक—स्व० व्रजनाथ झा ।

आकार रायल, (१९७७) पृष्ठ ७००, कपड़े की जिल्द ७४.६०

इस महाकाव्य में उदासीनमत का संस्कृत में सारगर्भ विवेचन है। सिक्खों की वेशभूषा, गुरुनानक की गोरखनाथ तथा उनके शिष्यों के साथ हुई वार्ता का उल्लेख, गुरुनानक द्वारा भ्रमण किये गये स्थानों का वर्णन इत्यादि विशदरूप में किया है ।

१०६. **काव्यप्रकाशः**—(साहित्यशास्त्र) पं० परमानन्दचक्रवर्ती कृत विस्तारिका व्याख्या से विभूषित ।

सम्पादक—डा० गौरीनाथशास्त्री ।

प्र० भा० आकार डिमाई (१९७६) पृ० २३६, कपड़े की जिल्द, ३८.००

द्वि० भा० डिमाई (१९८१), पृ० ३०२, कपड़े की जिल्द (यन्त्रस्थ)

आचार्य मम्मटरचित काव्यप्रकाश साहित्यशास्त्र का शिरोमणि ग्रन्थ है। इस पर 'विस्तारिका' टीका दार्शनिक दृष्टि से लिखी गई है। इसके प्रकाशित होने से साहित्यशास्त्र के अध्येताओं को एक नई दृष्टि प्राप्त होगी ।

१०७. **बौधायनशुल्बसूत्रम्** [शुल्बशास्त्र] बोधायनाचार्य विरचित ।

सम्पादक—पं० श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ।

आकार रायल, (१९७९), पृष्ठ १७६, कपड़े की जिल्द ७५.००

'बौधायनशुल्बसूत्र' शुल्बशास्त्र का अत्यन्त मौलिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन व्यंकटेश्वर दीक्षित कृत 'बोधायनशुल्बमीमांसा' एवं श्रीद्वारकानाथयज्व कृत 'शुल्बदीपिका' नामक टीकाओं सहित किया गया है। इस ग्रन्थ को स्पष्ट करने के लिए इसके परिशिष्ट में ७३ रेखाचित्र भी दिये गये हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१०८. यन्त्रराजविचारविंशाध्यायी [यन्त्रशास्त्र] श्रीनयनसुखोपाध्याय विरचित ।

सम्पादक—पं० श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ।

आकार रायल, (१९७९), पृष्ठ ३३, सादा जिल्द ११.००

यह ग्रन्थ मूलरूप से अरबिकभाषा में लिखा गया था—जिसका संस्कृत-रूपान्तरण श्रीनयनसुखोपाध्याय ने किया है। इस पुस्तक में ज्योतिष-शास्त्रीय वेधादियन्त्रों का वर्णन मौलिक रूप में हुआ है।

१०९. जैमिनीयं सामगानम् [संगीतशास्त्र] आचार्य जैमिनि कृत ।

सम्पादक—पं० श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ।

आकार रायल, (१९७६), पृष्ठ ३५४, कपड़े की जिल्द ४५.५०

इस ग्रन्थ में सामगान की विविध पद्धतियों का विवेचन हुआ है।

११०. गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः [गोरक्षदर्शन]।

सम्पादक—श्रीजनार्दन पाण्डेय ।

आकार रायल, (१९७३), पृष्ठ ६८, कपड़े की जिल्द १०.५०

इस ग्रन्थ में नाथसम्प्रदाय की परम्परा एवं उसकी साधनाओं का विवेचन किया गया है।

१११. गोरक्षसंहिता [गोरक्षदर्शन] श्रीगोरक्षनाथ विरचित ।

सम्पादक—श्रीजनार्दन पाण्डेय ।

आकार रायल (१९७६), पृष्ठ ४१८, कपड़े की जिल्द-प्रथमभाग ५०.१०
" " (१९७७), पृष्ठ ४१६—५९२ " द्वितीय भाग ३४.००

इस ग्रन्थ में गोरक्षसम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्तों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

११२. **प्रक्रियाकौमुदी** [व्याकरणशास्त्र] रामचन्द्राचार्य प्रणीत ।

सम्पादक—श्रीमुरलीधर मिश्र ।

आकार रायल, (१९७७), पृष्ठ ४९०, कपड़े की जिल्द, प्रथम भाग ५२.००
" " (१९७७), पृष्ठ ४३६, " " द्वितीय भाग ६७.००
" " (१९८०), पृष्ठ ६३७, " " तृतीय भाग ८४.००

इस ग्रन्थ में पाणिनि व्याकरण की प्रक्रियापद्धति को बहुत स्पष्ट एवं सरल किया गया है । श्रीकृष्णाचार्य की 'प्रकाश' व्याख्या ने इस ग्रन्थ की मौलिकता को और अधिक सुबोध बना दिया है ।

११३. **रसगङ्गाधरः** [साहित्यशास्त्र] पण्डितराज जगन्नाथ प्रणीत ।

सम्पादक—पं० श्रीकेदारनाथ ओझा ।

आकार डिमाई, (१९७७), पृ० ३४४, कपड़े की जिल्द, प्र० भाग-२२.००
आकार डिमाई, (१६८१), पृष्ठ ८४१, कपड़े की जिल्द ६०.००

साहित्यशास्त्र के प्राणभूत इस ग्रन्थ का प्रकाशन पं०श्रीकेदारनाथ ओझा प्रणीत 'रसचन्द्रिका' नाम की अभिनव संस्कृतटीका के साथ किया गया है। श्री ओझा जी ने अपनी मार्मिक एवं पाण्डित्यपूर्ण टीका द्वारा रसगंगाधर के गूढ़भावों को भी सुबोध बनाया है ।

११४. **शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता** (उत्तरविंशतिः) [वेद] ।

सम्पादक—श्रीचिन्तामणिमिश्र शर्मा ।

आकार क्राउन, (१९७८), पृष्ठ ३८५, कपड़े की जिल्द २२.००

शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता (उत्तरविंशति) के इस संस्करण का प्रकाशन सायणाचार्य के 'भाष्य' के साथ हुआ है । यह ग्रन्थ चिरकाल से अनुपलब्ध था । इसके प्रकाशन से वैदिक साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

११५. **चिद्गगनचन्द्रिका** [तन्त्रशास्त्र] महाकवि कालिदास विरचित ।

सम्पादक—स्व० आचार्य रघुनाथ मिश्र ।

आकार रायल, (१९८०), पृष्ठ २२५, कपड़े की जिल्द ४६.००

यह ग्रन्थ संस्कृतसाहित्य के अध्येताओं के लिए प्रायः नया है । इसके लेखक महाकवि कालिदास हैं । पूरा ग्रन्थ पद्यमय है । इसमें 'क्रमदर्शन' नामक नये दर्शन की स्थापना की गयी है । यह दर्शन गूढ़ एवं अभिनव है, अतः इसकी गूढ़ता को सुबोध बनाने के लिए स्व० रघुनाथ मिश्र ने इस पर 'क्रमप्रकाशिका' नामक टीका की रचना की है ।

११६. **वाक्यपदीयपाठभेदनिर्णयः** (प्रथम भाग) [व्याकरणशास्त्र]

पं० श्रीरघुनाथ शर्मा विरचित ।

सम्पादक--पं० श्रीरघुनाथ शर्मा ।

आकार रायल (१९८०), पृष्ठ २०३, कपड़े की जिल्द २६.००

'वाक्यपदीय' व्याकरणदर्शन का प्राणभूत ग्रन्थ है । इसीलिए इसके अनेक संस्करण हुए । अनेक संस्करणों में इसके मूल पाठों में परस्पर अन्तर आ गये हैं । श्री पं०रघुनाथ शर्मा जी ने शास्त्रीय विधि से उन-उन पाठान्तरों की विवेचना करते हुए ग्राह्य पाठ का निर्णय किया है ।

११७. **श्लोकसिद्धान्तकौमुदी** [व्याकरणशास्त्र] आचार्य श्री सुरेश झा विरचित ।

सम्पादक—श्री सुरेश झा ।

आकार डिमाई (१९८१), पृष्ठ ६३४, कपड़े की जिल्द, प्रथमभाग—३१.००

" " (१९८१),............ " " द्वितीय भाग-(यन्त्रस्थ)

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण 'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी' का पद्यानुवाद किया गया है। ग्रन्थ के प्रणेता पं० श्री सुरेश झा हैं। श्री झा जी ने प्रायः अनुष्टुप छन्दों में सिद्धान्तकौमुदी के सूत्र, वृत्ति तथा 'तत्त्वबोधिनी' टीका आदि के मर्म का समावेश किया है। साथ में 'सिद्धान्तकौमुदी' के क्रम से सूत्रों को भी यथावत् रखा गया है। लेखक ने बहुत से नये प्रयोगों को उद्धृत करते हुए सिद्धान्तकौमुदी को बहुजनहिताय बनाया है। व्याकरण-शास्त्र के इतिहास में इस प्रकार का सरस प्रयास सम्भवतः पहली बार हुआ है। विद्यार्थियों के लिए तो यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला

१. *सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग १।

इसमें निम्नलिखित तीन निबन्धों का संग्रह है—

१. **स्टडीज इन हिन्दू ला** (हिन्दू-विधिशास्त्र का अध्ययन), लेखक—गङ्गानाथ झा

२. **दि व्यू प्वाइण्ट आफ न्यायवैशेषिक फिलासफी** (न्यायवैशेषिक दर्शन का दृष्टिकोण), ले०—गोपीनाथ कविराज।

३. **निर्माणकाय,** ले०—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।

२. *सरस्वतीभवन स्टडीज, भाग २।

इसमें निम्नलिखित १२ निबन्धों का संग्रह है।

१. **परशुराममिश्र एलाइज वाणीरसाल राय,** लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज।

२. **इन्डेक्स टु बुक्स १–वाल्यूम आफ 'शाबराज्य भाष्य'** (ग्रन्थसूची भाग १, शाबरभाष्य खण्ड) लेखक—गङ्गानाथ झा।

३. **स्टडीज इन हिन्दू ला एण्ड इट्स सोर्सेज** (१. हिन्दू-विधिशास्त्र का अध्ययन एवं उसके स्रोत), लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज।

४. **ए न्यू भक्तिसूत्र** (नवीन भक्ति सूत्र), लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज।

५. **दि सिस्टम् आफ चक्राज एकार्डिङ्ग टु गोरक्षनाथ** (गोरक्षनाथ के अनुसार चक्रों की परम्परा) लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थों का मुद्रण हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

६. **थीइज्म इन एन्सियेण्ट इण्डिया** (प्राचीन भारत में आस्तिकवाद) लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

७. **हिन्दू पोयटिक्स** (हिन्दू काव्यशास्त्र) लेखक—प्रो० बटुकनाथ शर्मा ।

८. **ए सेवेंटिन्थ सेञ्चुरी एस्ट्रोलेब** (सत्रहवीं शताब्दी का एस्ट्रोलेब) लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

९. **सम आस्पेक्ट्स आफ वीरशैव फिलासफी** (वीरशैव दर्शन के कुछ पक्ष) लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

१०. **न्यायकुसुमाञ्जलि** (अंग्रेजी अनुवाद), अनुवादक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

११. **दि डेफिनिशन आफ पोयट्री** (कविता की परिभाषा) लेखक—स्व० नारायणशास्त्री खिस्ते ।

१२. **शण्डल उपाध्याय**, लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

३. ***सरस्वतीभवन स्टडीज**, भाग ३ ।

प्रस्तुत खण्ड में निम्नलिखित ६ निबन्धों का संग्रह है ।

१. **इन्डेक्स टु साबराज भाष्य** (शाबरभाष्य की सूची) ले०—काल जी० ए० जैकब ।

२. **स्टडीज इन हिन्दू ला** (हिन्दू-विधिशास्त्र का अध्ययन) ले० गङ्गानाथ झा ।

३. **थीइज्म इन एन्सियेण्ट इण्डिया** (प्राचीन भारत में आस्तिकवाद) ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

४. **हिस्ट्री एण्ड बिब्लियोग्राफी आफ न्यायवैशेषिक लिटरेचर** (न्यायवैशेषिक साहित्य का इतिहास एवं ग्रन्थसूची), लेखक—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

---

* तारांकित ग्रन्थों का मुद्रण हो रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

५. **नैषध एण्ड श्रीहर्ष** (नैषध एवं श्रीहर्ष) लेखक--नीलकमल भट्टाचार्य ।

६. **इण्डियन ड्रामेटर्जी** (भारतीय नाट्यकला) लेखक--पी० यन्० पटङ्कर, एम्० ए० ।

४. ***सरस्वतीभवन स्टडीज**, भाग ४ ।

प्रस्तुत खण्ड में ९ निबन्ध सङ्कलित हैं ।

१. **स्टडीज इन हिन्दू ला कम जुडिशियल प्रोसीजर** (हिन्दू-विधि शास्त्र का अध्ययन, व्यवहार-सम्बन्धी] ले०— गङ्गानाथ झा ।

२. **हिस्ट्री एण्ड बिब्लियोग्राफी आफ न्यायवैशेषिक लिटरेचर** (न्याय-वैशेषिक साहित्य का इतिहास एवं ग्रन्थसूची) लेखक--म० म० गोपीनाथ कविराज ।

३. **एनालीसिस् आफ दि कण्टेण्ट्स आफ दि ऋग्वेदप्रातिशाख्य** (ऋग्वेदप्रातिशाख्य की विषयसूची का विश्लेषण) लेखक--डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री ।

४. **गणितकौमुदी आफ नारायण पण्डित** (नारायण पण्डित की गणितकौमुदी), लेखक--पद्माकर द्विवेदी ।

५. **फूड एण्ड ड्रिंक इन दि रामायणिक एज** (रामायण युग में भोज्य एवं पेय), लेखक--मन्मथनाथ राय ।

६. **दि प्राब्लम आफ कैजुएल्टी : सांख्ययोग व्यू** (आकस्मिकता की समस्या : सांख्ययोग की दृष्टि) लेखक--म० म० गोपीनाथ कविराज ।

७. **डिसिप्लिन वाई कन्सीक्वेंसेज इन एन्सिएण्ट इण्डिया**, ले०-- जी० एल० सिनहा ।

८. **हिस्ट्री आफ ओरिजिन एण्ड एक्सपेन्सन आफ दि आर्यन्स (१) द्यौ एण्ड पृथिवी** । (आर्यों के विस्तार एवं मूलस्रोत का इतिहास (१) द्यौ एवं पृथिवी), लेखक--अतुलचन्द्र गांगुली ।

---

* तारांकित ग्रन्थों का मुद्रण हो रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

९. **पनिश्मेण्ट इन एन्स्येन्ट इण्डियन स्कूल्स** (प्राचीन भारतीय विद्यालयों में दण्ड), ले०—जी० एल० सिनहा।

५. ***सरस्वतीभवन स्टडीज,** भाग ५।

इसमें निम्नलिखित ७ का संग्रह है—

१. **एन्स्येण्ट होम आफ दि आर्यन्स एण्ड देयर माइग्रेशन टु इण्डिया** (आर्यों का आदि देश तथा भारत में उनका आगमन), लेखक—अतुलचन्द्र गांगुली।

२. **ए सत्रप क्वायन** (सत्रप सिक्का), ले०—श्यामलाल मेहर।

३. **एन एस्टीमेट आफ दि सिविलाइजेशन आफ दि बनारस एज डिपिक्टेड इन दि रामायण** (रामायण में अभिव्यक्त बनारस की संस्कृति का मूल्यांकन), लेखक—मन्मथनाथ राय।

४. **ए कम्परीजन आफ दि कन्टेन्ट्स आफ दि ऋग्वेद, वाजसनेयी, तैत्तिरीय एण्ड अथर्ववेद (चतुरध्यायिका) प्रातिशाख्याज्** (ऋग्वेदविषयानुक्रमणी की तुलना : वाजसनेयी, तैत्तिरीय और अथर्ववेद (चतुरध्यायिका) प्रातिशाख्य) ले०—डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री।

५. **डाक्ट्रिन आफ फार्मल ट्रेनिङ्ग एण्ड दि एन्स्येन्ट इण्डियन थाट्** ले०—जी० एल० सिनहा।

६. **हिस्ट्री एण्ड बिब्लियोग्राफी आफ न्याय-वैशेषिक लिटरेचर** (न्याय-वैशेषिक वाङ्मय का इतिहास तथा विषय परिचय सूची), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

७. **नोट्स एण्ड क्वैरीज़्** (टिप्पणी तथा परीक्षण), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

६. ***सरस्वतीभवन स्टडीज,** भाग ६।

इसमें निम्नलिखित ६ निबन्ध हैं।

१. **इन्डेक्स टु शाबराज् भाष्य** (शाबरभाष्य की सूची) ले०—कोल० जी० ए० जैकब

---

* ताराङ्कित ग्रन्थों का मुद्रण हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

२. **सम आस्पेक्टस् आफ दि हिस्ट्री एण्ड डाक्ट्रिन्स आफ दि नाथाज्** (नाथों के इतिहास एवं सिद्धान्तों के कुछ पक्ष), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

३. **एन इन्डेक्स टु दि रामायण** (रामायण की सूची), ले०—मन्मथनाथ राय।

४. **स्टडीज इन हिन्दू लॉ** (४. हिन्दू विधि शास्त्र का अध्ययन) ले०—गङ्गानाथ झा।

५. **दि मीमांसा मैन्युस्क्रिप्ट्स् इन दि गवर्नमेण्ट संस्कृत लाइब्रेरी, बनारस** (राजकीय संस्कृत पुस्तकालय, बनारस में मीमांसा ग्रन्थों के हस्तलेख) ले० म० म० गोपीनाथ कविराज।

६. **नोट्स एण्ड क्वैरीज** (टिप्पणी तथा परीक्षण), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

७. ***सरस्वतीभवन स्टडीज**, भाग ७।

इसमें निम्नलिखित ११ निबन्धों का संग्रह है—

१. **भामह एण्ड हिज काव्यालंकार** (भामह और उनका काव्यालंकार), ले०—प्रो० वटुकनाथ शर्मा तथा आचार्य बलदेवोपाध्याय।

२. **सम वारीयेण्ट्स इन दि रीडिंग्स आफ दि वैशेषिक सूत्राज्** (वैशेषिक सूत्रों के कुछ पाठभेद) ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

३. **हिस्ट्री एण्ड बिब्लियोग्राफी आफ न्याय-वैशेषिक लिटरेचर** (न्यायवैशेषिक वाङ्मय का इतिहास तथा विषयसूची), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

४. **ऐन अटेम्प्ट टु एराइव ऐट दि करेक्ट मीनिंग आफ सम आब्सक्योर वैदिक वर्ड्स।** (कुछ अस्पष्ट वैदिक शब्दों के समुचित अर्थज्ञान का एक प्रयास), ले०—सीताराम जोशी।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थों का मुद्रण हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

५. **ए कम्परीजन आफ दि कन्टेन्ट्स आफ दि ऋग्वेद, वाजसनेयी, तैत्तिरीय एण्ड अथर्ववेद** (चतुरध्यायिका) **प्रातिशाख्यादि** (ऋग्वेद, वाजसनेयी, तैत्तिरीय तथा अथर्ववेद प्रातिशाख्यों के विषयों की तुलना), ले०—डा० मङ्गलदेव शास्त्री।

६. **एन इन्डेक्स टु दि रामायण** (रामायण की सूची), ले०—मन्मथनाथ राय।

७. **एन इण्डेक्स टु शाबराज् भाष्य** (शाबरभाष्य की सूची), ले०—कोल० जे० ए० जैकब।

८. **ग्लीनिंग्स फ्राम दि तन्त्राज्** (तन्त्रों से चमत्कार), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

९. **दि डेट आफ मधुसूदन सरस्वती** (मधुसूदन सरस्वती का तिथि-विवेचन), ले०—म० म० प० गोपीनाथ कविराज।

१०. **डिस्क्रिप्टिव नोट्स् आन संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट** (संस्कृत हस्तलेख पर विशेष टिप्पणी), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज।

११. **ए नोट आन दि मीनिंग आफ दि टर्म 'परार्ध'** (परार्ध-शब्दार्थ-विचार), ले०—डा० उमेश मिश्र।

८. ***सरस्वतीभवन स्टडीज,** भाग ८।

इसमें निम्नलिखित ६ निबन्ध मुद्रित हुए हैं—

१. **इण्डियन फिलासफी : ए रिव्यू**(भारतीय दर्शन : एक समालोचना), ले०—तारकनाथ सान्याल।

२. **एन इण्डेक्स टु दि प्रापर नेम्स आकरिंग इन वाल्मीकीज रामायण** (वाल्मीकि रामायण के मुख्य नामों की सूची) ले०—मन्मथनाथ राय।

३. **एन इण्डेक्स टु दि शाबरभाष्य** (शाबरभाष्य की सूची), ले०—कोल० जी० ए० जैकब।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थों का मुद्रण हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

४. **हरिस्वामी—दि कमेण्टेटर आफ दि शतपथब्राह्मण एण्ड दि डेट आफ स्कन्दस्वामी-दि कमेण्टेटर आफ दी ऋग्वेद** (शतपथब्राह्मण के टीकाकार हरिस्वामी और ऋग्वेद के टीकाकार स्कन्दस्वामी का समय), ले०—डा० मङ्गलदेव शास्त्री ।

५. **मिस्टिसिज्म इन वेद** (वेदों में रहस्यवाद), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

६. **दि देवदासीज् : ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ दि इन्स्टीटयूशन** (देवदासीप्रथा का इतिहास), ले०—मन्मथनाथ राय ।

९: ***सरस्वतीभवन स्टडीज**, भाग ९ ।

इसमें निम्नलिखित ४ निबन्धों का संग्रह है ।

१. **दि लाइफ आफ योगिज्** (योगी का जीवन), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

२. **आन दि एण्टीक्विटी आफ दि इण्डियन आर्ट कैनन्स ।** ले०—हरिदास मित्र ।

३. **प्राच्य वर्गीकरण पद्धति**, ले०—सतीशचन्द्र गुप्त ।

४. **एन इण्डेक्स टु दि रामायण** (रामायण की सूची), ले०—मन्मथनाथ राय ।

१०. **सरस्वतीभवन स्टडीज**, भाग १० ।

इसमें निम्नलिखित १२ निबन्धों का संग्रह है—

१. **दि कन्सेप्शन आफ फिजिकल एण्ड सुपर फिजिकल आर्गनिज्म इन संस्कृत लिटरेचर** (संस्कृतसाहित्य में कुछ भौतिक एवं अतिभौतिक सङ्घों की अवधारणा), ले०—म० म० गोपीनाथ कविराज ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

२. **सम आस्पेक्ट्स आफ दि फिलासफी आफ शाक्ततन्त्र** (शाक्ततन्त्र दर्शन के कुछ पक्ष)

ले०—म म० गोपीनाथ कविराज ।

३. **ए शार्ट नोट आन तत्त्वसमास** (तत्त्वसमास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी), ले०--म० म० गोपीनाथ कविराज ।

४. **हिस्ट्री आफ दि वर्ड ईश्वर ऐण्ड इट्स आइडिया** (ईश्वर शब्द तथा उसके विचार का इतिहास), ले० डा० मङ्गलदेव शास्त्री ।

५. **स्पोर्टस् ऐण्ड गेम्स ऐज् रेफर्ड टु इन संस्कृत लिटरेचर** (संस्कृतसाहित्य में खेलों का वर्णन), ले०—प० अनन्त शास्त्री फडके ।

६. **आब्जेक्ट आफ आफरिंग् इन दि श्रौत सेक्रिफाइसेस** (श्रौत यज्ञों में बलिदान), ले०—चिन्नस्वामी शास्त्री ।

७. **एग्रीकल्चर इन दि वेदाज** (वेदों में कृषि), ले०—यस्० यन्० झारखण्डी ।

८. **एन इन्क्वाइरी इन टु दि नेचर आफ स्पीच** (वाक्तत्त्वविमर्श), ले० —हाराणचन्द्र भट्टाचार्य ।

९. **डाइटीज् एण्ड आब्जेक्ट्स आफ आफरिंग्स इन दि श्रौत सेक्रीफाइसेस** (श्रौतयज्ञों में देवताओं की संज्ञाएँ और उनके हविष्य), ले०—भगवत्प्रसाद मिश्र ।

१०. **ए कम्परीजन आफ दि ऋग्वेद प्रातिशाख्य विथ दि पाणिनीयन् ग्रामर** (पाणिनीय व्याकरण से ऋग्वेद प्रातिशाख्य की तुलना), ले०—डा० मंगलदेव शास्त्री ।

११. **कीर्तिकौमुदी ऐण्ड इट्स आथर** (कीर्तिकौमुदी तथा उसके लेखक), ले०—शान्तिमय वनर्जी ।

१२. **दि शक्तिसूत्र एस्क्राइब्ड टु अगस्त्य।** ले०—डा० मङ्गलदेव शास्त्री ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

११. **व्याकरणदर्शनभूमिका** (व्याकरणदर्शन), [द्वितीय संस्करण] श्रीरामाज्ञा पाण्डेय द्वारा रचित।

आकार रायल पृ० १३०, कपड़े की जिल्द (१९८२ ई०) (तत्काल प्रकाश्य)

ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ को तीन खण्डों में लिखा है, यह प्रथम खण्ड की भूमिका है। इसमें दर्शन के लिए जिन अंशों की आवश्यकता होती है, उनका व्याकरण-दर्शन की दृष्टि से संचय किया गया है। इस ग्रन्थ में स्फोट के आठ से १६ भेद बताये गये हैं।

१२. **व्याकरणदर्शनपीठिका** (व्याकरणदर्शन), श्रीरामाज्ञा पाण्डेय द्वारा रचित।

आकार रायल कपड़े की जिल्द, (१९८२ ई०) (यन्त्रस्थ)

इस भाग में वर्णों का स्वरूप, उत्पत्ति, शब्दस्वरूप, अयोगवाह, उच्चारणप्रक्रिया आदि का विवेचन है।

१३. **ग्रहगणितमीमांसा**—अनुसन्धान प्रबन्ध (ज्योतिष) डा० मुरारीलाल शर्मा द्वारा रचित।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० १५२, (१९६५ ई०) ५.५०

इसमें ग्रहों की गति का समुचित विवेचन किया गया है। पञ्चाङ्ग-कारों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन मतों की प्रामाणिक समालोचना है। उत्तर प्रदेशीय शासन द्वारा गङ्गानाथ झा पुरस्कार दिया गया है।

२४. **पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा**—अनुसन्धान प्रबन्ध (व्याकरण) डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' द्वारा विरचित। (यन्त्रस्थ)

पाणीनीय धातुपाठ में पठित सवा दो हजार धातुओं में केवल नौ सौ धातु ही प्रामाणिक हैं, ऐसा विलियम् ड्वाइट ह्विट्नी का मत है। उसका निराकरण करके भारोपीय, भारेनीय, भारतीय—संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी प्रभृति भाषाओं के प्रयोगों

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

का निदर्शन ग्रन्थ की विशेषता है। पाणिनीय और अपाणिनीय धातुओं, धात्वर्थों का उल्लेख भी किया गया है। धातुरचना का प्रकार और उनके विश्लेषण के लिये धातुध्वनियों की भी तुलना की गई है। ग्रन्थ उत्तरप्रदेशीय शासन द्वारा संस्कृत के सर्वोच्च कालिदास पुरस्कार से सम्मानित है।

१५. **सूर्यग्रहणम्**—अनुसन्धान प्रबन्ध (ज्योतिष) डा० कृष्णचन्द्र द्विवेदी कृत।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २२२ (१९६७ ई०) १२.००

यद्यपि प्राचीन आचार्यों की ऐसी कोई पद्धति नहीं है, जिससे भूमण्डलीय सूर्यग्रहण का विचार किया जा सके; तथापि प्राचीन उपकरणों से सूर्यग्रहण बनाने की प्रक्रिया का विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है। साथ ही वेसल, नेपियर, रावर्टवाल की पद्धतियों का सम्यक् विचार किया गया है। पञ्चाङ्गकर्ताओं के लिए ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। गङ्गानाथ झा पुरस्कार से सम्मानित है।

१६. **प्रक्रियाकौमुदीविमर्शः**—अनुसन्धान प्रबन्ध (व्याकरण) डा० आद्या-प्रसाद मिश्र कृत।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द. पृष्ठ १५९ (१९६६ ई०) ८.००

इसमें प्रक्रियाकौमुदी पर गम्भीर विवेचन किया गया है। गङ्गानाथ-झा पुरस्कार से सभाजित है।

१७. **अथर्ववेदे शान्तिपुष्टिकर्माणि**—अनुसन्धान प्रबन्ध (वेद) डा० माया-मालवीया द्वारा रचित।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ १९६, (१९६७ ई०) ८.००

इसमें सिद्ध किया गया है कि अथर्ववेद में केवल आभिचारिक कर्म ही नहीं, शान्तिपुष्टिकर्मों का भी विस्तृत विवेचन है, जो समान-रूप से सब वेदों में प्रतिपादित हैं। इस सिद्धान्त के पक्ष और प्रतिपक्ष में भारतीय तथा वैदेशिक विचारकों के मतों की भी शास्त्रीय समीक्षा की गई है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१८. **श्राद्धकल्पः**—(धर्मशास्त्र) श्रीदत्तोपाध्याय कृत।
सम्पादक—डा० अशोकचटर्जी शास्त्री।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २४० (१९७१ ई०) १६.००

यह मैथिल-सम्प्रदाय का ग्रन्थ है, इस पर सम्पादक की समीक्षा उनकी विद्वत्ता की परिचायक है।

१९. **प्राच्यभारतीयम् ऋतुविज्ञानम्**—अनुसन्धान प्रबन्ध (ज्योतिष) डॉ० धुनीराम त्रिपाठी द्वारा विरचित।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २७० (११७१ ई०) १८.००

इसमें ज्योतिषशास्त्र तथा संस्कृतभाषा के अनेक ग्रन्थों में उद्धृत ऋतु-विज्ञान सम्बन्धी वचनों तथा लोकभाषा में प्रसिद्ध घाघ और भड्डर की लोकोक्तियों का आधुनिक विज्ञान के साथ तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

२०. **पाणिनीयव्याकरणे प्रमाणसमीक्षा**—अनुसन्धान प्रबन्ध (व्याकरण) डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी द्वारा विरचित।
आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ४७६, (१९७२ ई०) २६.२५

बिना प्रमाण के किसी भी प्रमेय की सिद्धि नहीं होती—इसी आधार पर पाणिनीय व्याकरण में भी प्रमेयसिद्धि के लिये प्रमाणों की नितान्त आवश्यकता होने के कारण यह ग्रन्थ रचा गया है। जिस प्रकार न्याय-वेदान्तादि दर्शनों में पद-पद पर प्रमाणों की समीक्षा की गई है, उसी प्रकार मुनित्रय के आधार पर इस व्याकरणदर्शन में भी प्रमाणों की समीक्षापूर्ति इस ग्रन्थ से हुई है। अपने आप में यह नितान्त अपूर्व और मौलिक ग्रन्थ है। इसमें ६ समीक्षाएँ हैं। समीक्षाओं में कुल १५ पुष्प हैं।

२१. **कातन्त्रव्याकरणविमर्शः** अनुसन्धान प्रबन्ध [व्याकरण] लेखक—डा० जानकीप्रसाद द्विवेदी।
आकार—रायल (१९७५), पृ० ३७६, कपड़े की जिल्द, ४०.००
यह अनुसन्धान प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय की वाचस्पति उपाधि के लिए स्वीकृत है। इसमें कातन्त्रव्याकरण का मार्मिक विवेचन हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

२२. **महाभाष्यनिगूढाकूतयः** अनुसन्धान प्रबन्ध [व्याकरणशास्त्र]—
डा० देवस्वरूप मिश्र कृत।
आकार रायल, (१९७८), पृ० १८८, कपड़े की जिल्द। २६.८०

इस अनुसन्धान प्रबन्ध में विद्वान्, लेखक ने महाभाष्य के गूढ़तम रहस्यों पर शास्त्रीय विवेचनपूर्वक प्रकाश डाला है।

२३. **व्याकरणदर्शनप्रतिमा** [व्याकरणशास्त्र] स्व० रामाज्ञा पाण्डेय कृत।
सम्पादक—श्रीरामगोविन्द शुक्ल।

आकार डिमाई (१९७९), पृष्ठ—२७०, कपड़े की जिल्द, ३३.६०
इस ग्रन्थ में विद्वान लेखक ने व्याकरणदर्शन के विविध पक्षों का गम्भीर विवेचन किया है।

२४. **पुराणेतिहासयोः सांख्ययोगदर्शनविमर्शः** [दर्शनशास्त्र] अनुसन्धान प्रबन्ध।

डा० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी कृत।
आकार रायल, (१९७९), पृष्ठ—२८९, कपड़े की जिल्द, २६.५०

इस प्रबन्ध में लेखक ने महाभारत एवं पुराणों में वर्णित दार्शनिक पदार्थों का विवेचन किया है।

२५. **वैयाकरणानामन्येषां च मतेन शब्दस्वरूपतच्छक्तिविचारः**
[व्याकरणशास्त्र], अनुसन्धान प्रबन्ध।
डा० कालिका प्रसाद शुक्ल कृत।
आकार रायल, (१९७९) पृष्ठ—१५१, कपड़े की जिल्द, २६.५०

इस अनुसन्धान प्रबन्ध में विद्वान् लेखक ने शब्दस्वरूप एवं उसकी शक्ति के विषय में विविध दार्शनिक सिद्धान्तों की समालोचना की है।

२६. **वैशेषिकसिद्धान्तानां गणितीयपद्धत्या विमर्शः** [वैशेषिकदर्शन]
अनुसन्धान प्रबन्ध।

डा० नारायण गोपाल डोंगरे कृत।
आकार रायल, (१९७९), पृष्ठ—१२२, कपड़े की जिल्द, २४.६०
इस अनुसन्धान प्रबन्ध में वैशेषिकदर्शन के सिद्धान्तों का तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

२७. **भारतीयकर्मकाण्डस्वरूपाध्ययनम्** [धर्मशास्त्र] अनुसन्धान प्रबन्ध ।

डा० विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी कृत ।

आकार रायल, (१९८०), पृष्ठ—२४०, कपड़े की जिल्द, २६.००

इस प्रबन्ध में लेखक ने कर्मकाण्ड के सभी पक्षों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया है ।

२८. **धात्वर्थविज्ञानम्** [व्याकरणशास्त्र], अनुसन्धान प्रबन्ध ।

डा० भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' प्रणीत ।

आकार रायल, (१९८०), पृष्ठ २६०, कपड़े की जिल्द, ३१-००

इस महनीय ग्रन्थ में धात्वर्थविज्ञान के गम्भीर मर्मज्ञ लेखक ने धात्वर्थ-विज्ञान पर भाषावैज्ञानिक प्रत्यग्र विवेचना की है ।

२९. **श्राद्धविमर्शः** [धर्मशास्त्र] अनुसन्धान प्रबन्ध ।

डा० उमाशंकर त्रिपाठी कृत ।

आकार रायल, (१९८१), पृष्ठ—१०७, कपड़े की जिल्द, २२.००

इस अनुसन्धान प्रबन्ध में लेखक ने भारतीय परिवेश में 'श्राद्ध' के ऊपर धर्मशास्त्रीय एवं वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया है ।

३०. **निपातार्थनिर्णयः** [व्याकरणशास्त्र] अनुसन्धान-प्रबन्ध ।

डा० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी विरचित ।

आकार, रायल, (१९८१), कपड़े की जिल्द, (तत्काल प्रकाश्य)

इस अनुसन्धान प्रबन्ध में संस्कृतभाषा के निपातों, अव्ययों तथा उपसर्गों का ऐतिहासिक एवं भाषा वैज्ञानिक विवेचन किया गया है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

[३]

गङ्गानाथझा-ग्रन्थमाला

१. **प्रशस्तपादभाष्यम्**—[द्वितीय संस्करण] (वैशेषिकदर्शन) न्याय-कन्दली टीकासहित ।

सम्पादक—श्रीदुर्गाधर झा

आकार रायल कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ७९१, (१९७७) ६८.००

प्रशस्तपादाचार्य द्वारा प्रणीत यह वैशेपिक ास्त्र का स्वतन्त्र ग्रन्थ है । यद्यपि इसकी अनेक टीकाएँ हैं, फिर भी अधिक बोधगम्य होने के कारण श्रीधरकृत 'न्यायकन्दली' टीका का ही समावेश किया गया है । सम्पादक द्वारा लिखित इसकी हिन्दी व्याख्या अत्यन्त उपयोगी है ।

२. ***न्यायसिद्धाञ्जनम्**—(वेदान्त) वेदान्तदेशिक कृत । नीलमेघाचार्य कृत भाषानुवाद से युक्त ।

यह रामानुजवेदान्तदर्शन के वडकलै-सम्प्रदाय का प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं । इसमें ६ परिच्छेद हैं –१. जडद्रव्य, २. जीव, ३. ईश्वर, ४. नित्य-विभूति, ५. बुद्धि, ६. अद्रव्य का विवेचन । हिन्दीभाषा में ग्रन्थ का अभिप्राय स्पष्ट किया गया है ।

३. **भक्तिरत्नावली**—(भक्तिशास्त्र) विष्णुपुरी द्वारा संगृहीत स्वोपज्ञटीका से युक्त । सम्पादक एवं भाषानुवादक—डा० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २०८, (१९६८ ई०) १५.००

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

श्रीमद्भागवतपुराण के भक्तिप्रतिपादक श्लोकों के संग्रह से १३ अध्यायों में यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसके प्रथम अध्याय में भक्ति-निरूपण, द्वितीय में भक्तिहेतु-निरूपण, तृतीय में भक्तिभेद-निरूपण। चतुर्थ से बारह तक नवधा भक्ति के भेदों का निरूपण है। तेरहवें अध्याय में शरणागति का निरूपण है। भक्ति के सम्बन्ध में यह ग्रन्थ प्रामाणिक तथा उपयोगी है। साथ ही सम्पादक की भूमिका पाठकों के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

४. ***विष्णुधर्मोत्तरपुराणम्**—शिल्पशास्त्र (चित्रसूत्र) सम्पादक डा० अशोक चटर्जी शास्त्री।

इस ग्रन्थ में चित्रनिर्माण प्रक्रिया का विधिवत् विवेचन किया गया है।

५. **विंशतिकाविज्ञप्तिमात्रतासिद्धिद्वयम्**—(बौद्धदर्शन) आचार्यवसुबन्धु द्वारा प्रणीत। व्याख्याकार अनुवादक एवं सम्पादक—थुबतन-छोगडुब् शास्त्री तथा पं० रामशंकर त्रिपाठी।

साइज रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ६५५, (१९७२ ई०) ३९.२५

इसमें 'विंशतिका' स्वोपज्ञवृत्ति युत, 'त्रिंशिका' स्थिरमति कृत भाष्यसहित तथा दोनों गूढार्थदीपनी व्याख्यानुवाद सहित। साथ ही १२५ पृ० की भूमिका है, जिसमें बौद्धविज्ञानवाद के मूल तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है।

६. **न्यायकुसुमाञ्जलिः** (न्यायदर्शन) श्रीउदयनाचार्य द्वारा विरचित। भाषानुवादक एवं सम्पादक—श्रीदुर्गाधर झा।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ६००, (१९७३ ई०) ५६.५०

ईश्वर की सत्ता न मानने वालों के पक्षों का उनके तर्कों और युक्तियों से खण्डन करके ईश्वर की सत्ता सिद्ध की गई है। इसकी हिन्दी व्याख्या ग्रन्थ को सुबोध बनाने में सहायक है।

७. **बौद्ध साधना का विकास**—पृष्ठ ७४, (१९७१ ई०) १.७५

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

८. **किरणावली** (वैशेषिकदर्शन) उदयनाचार्य विरचित ।

सम्पादक--श्रीगौरीनाथ शास्त्री ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ४०१ (१९८०) ४१.००

उदयनाचार्य वैशेषिकदर्शन के मान्य आचार्यों में हैं । उनके द्वारा रचित 'किरणावली' की आधिकारिक हिन्दी व्याख्या श्रीगौरीनाथ शास्त्रीजी ने की है । हिन्दी व्याख्या ने इस ग्रन्थ को सर्वजनबोध्य बनाया है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

गङ्गानाथझा-प्रवचनमाला

१. *वेदविज्ञानबिन्दुः—(वेद) म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी द्वारा विरचित ।

यह ग्रन्थ विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर प्रदत्त तीन प्रवचनों का संग्रह है । जिसमें विद्वान् वक्ता ने १–वेदों का स्वरूप, २–वैदिक देवता और ऋषि तथा ३–यज्ञ इन तीन विषयों पर अपना गम्भीर विचार प्रस्तुत किया है ।

२ *बौद्धदर्शनबिन्दुः—(बौद्धदर्शन) डा० सातकडिमुखोपाध्याय द्वारा विरचित ।

यह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर प्रदत्त तीन भाषणों का संग्रह है । इसमें १. शून्यवाद, २. विज्ञानवाद तथा ३. बौद्धन्याय पर विद्वान् वक्ता ने गम्भीर विचार प्रस्तुत किया है ।

३. *शैवदर्शनबिन्दुः—(शैवदर्शन) डा० कान्तिचन्द्रपाण्डेय द्वारा विरचित परिवर्धित संस्करण ।

यह तान्त्रिकप्रमेयबहुल प्रामाणिक ग्रन्थ है । सप्तम दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर प्रदत्त तीन प्रवचनों के संग्रहरूप में सं० २०२१ वि० में प्रकाशित लघुग्रन्थ के समाप्त हो जाने पर उसकी लोकप्रियता को देखते हुए उसका परिबृंहित संस्करण पुनः प्रकाशित किया गया ।

*ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

४. *अद्वैतवेदान्तबिन्दुः—(अद्वैतवेदान्त) म० म० पं० अनन्तकृष्ण द्वारा लिखित।

यह अद्वैतवेदान्तदर्शन का एक सारभूत ग्रन्थ है। इसमें विश्वविद्यालय के सप्तम स्थापना दिवस के अवसर पर दिये गये विद्वान् वक्ता के तीन प्रवचनों को प्रकाशित किया गया है।

५. *न्यायदर्शनबिन्दुः (न्यायदर्शन) म० म० पं० कालीपदतर्काचार्य द्वारा विरचित।

यह गङ्गानाथ झा-प्रवचनमाला के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के सप्तम दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर न्यायदर्शन के ऊपर दिये गये तीन व्याख्यानों का संग्रह है। इसमें वक्ता ने १. नव्यन्याय के पारिभाषिक पदार्थ, २. न्याय और वैशेषिक दर्शनों का पृथक् दर्शनस्वरूप, ३. प्राचीन व नव्यन्याय का सैद्धान्तिक पार्थक्य आदि विषयों पर विचार किया है।

६. *शैवदर्शनसङ्ग्रहः (शैवदर्शन) प्रथम संस्करण, डा० कान्तिचन्द्र पाण्डेय विरचित।

यह भी तीन विशिष्ट व्याख्यानों का एक संग्रह है। इसमें १. शैव-द्वैतदर्शन, २. शैवद्वैताद्वैतदर्शन तथा ३. शैवाद्वैतदर्शन पर विचार किया गया है।

७. *रामायण-महाभारतराजनीतिबिन्दुः—(नीतिशास्त्र) श्रीबदरीनाथ काशीनाथ शास्त्री द्वारा रचित।

इसमें संक्षेप में रामायण-महाभारत कालीन राजनीति का विवेचन है।

८. *व्याकरणदर्शनबिन्दुः—(व्याकरणदर्शन) पं० रघुनाथ शर्मा द्वारा रचित।

वाक्यपदीय के आधार पर तीनों काण्डों के विषयों को तीन प्रवचनों में व्यक्त किया गया है। वाक्यपदीय के दार्शनिक विषयों के ज्ञान के लिये यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

९. *वेदान्तदर्शनबिन्दुः—(वेदान्तदर्शन) श्री एस्० सुब्रह्मण्यशास्त्री द्वारा रचित ।

इसमें तीन प्रवचनों का संग्रह है—१. उपनिषत्स्वद्वैतवादः, २. ब्रह्मसूत्राणामद्वैतानुगुण्यम्, ३. पूर्वमीमांसान्यायानां वेदान्तार्थनिर्णयोपयोगः । परिमार्जित तथा प्रवाहयुक्त भाषा में विषयों का हृदयंगम विवेचन किया गया है ।

१०. *राजनीतिदर्शनबिन्दुः—अनन्तश्रीविभूषित स्वामिश्रीहरिहरानन्दसरस्वती (स्वामी करपात्रीजी) महाराज द्वारा विरचित ।

इस विश्वविद्यालय के एकादश दीक्षान्तसमारोह में स्वामीजी ने तीन प्रवचन दिये थे, जिनका संग्रह प्रस्तुत है । इसमें प्रथम प्रवचन 'पुरुषार्थमीमांसा' है । पुरुषार्थों के प्रतिपादन के साथ मार्क्सदर्शन को पूर्वपक्ष के रूप में प्रतिपादित करके उसका निराकरण किया गया है । इस ग्रन्थ के द्वारा मार्क्सदर्शन तथा उस पर भारतीय दर्शन के प्रभाव का समुचित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । द्वितीय प्रवचन में श्रीमद्भागवत में पुरुषार्थ का वर्णन तथा तीसरे में श्रीमद्भागवत के अनुसार ईश्वर की सत्ता सिद्ध की गयी है । इसमें समस्त दर्शनों के विचारों को प्रस्तुत करते हुए सिद्धान्तपक्ष का विवेचन हुआ है ।

११. वैदिकशिक्षादर्शनबिन्दुः [दर्शनशास्त्र] ।

पं० श्रीपट्टाभिराम शास्त्री द्वारा प्रणीत तथा सम्पादित ।

आकार रायल, पृ० ३०, (१९८०) १.५०

इस विश्वविद्यालय के इक्कीसवें दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर विद्वान् वक्ता द्वारा तीन व्याख्यान दिये गये । उन्हीं तीनों व्याख्यानों को इस ग्रन्थ में संगृहीत किया गया है । इन व्याख्यानों में विद्वान् वक्ता ने शिक्षा एवं अन्य दार्शनिक विषयों पर तलस्पर्शी विचार प्रकट किया है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१२. **शब्दाद्वैतदर्शनबिन्दुः**—[दर्शनशास्त्र]।

पं० श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी प्रणीत तथा सम्पादित ।

आकार रायल, पृ० ३२ ; (१९८१) २.५०

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के बाइसवें दीक्षान्तसमारोह के अवसर पर विद्वान् वक्ता ने तीन प्रवचन किये थे। उन तीनों प्रवचनों का संग्रह इस ग्रन्थ में प्रकाशित है । इसमें संगृहीत निबन्ध विविध दार्शनिक गुत्थियों को सुलझाने में महत्त्वपूर्ण सहायता करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

सम्पूर्णानन्द-ग्रन्थमाला

१. *दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धतिः (ज्योतिषशास्त्र) श्रीगणपतिदेव शास्त्री द्वारा रचित एवं सम्पादित।

पञ्चाङ्गनिर्माण सूर्यसिद्धान्त के अनुसार होता है। इसकी कई सारणियाँ तथा पद्धतियाँ हैं। उनमें तिथिसाधन की प्राचीन पद्धति वर्णित है। इस ग्रन्थ में वेधसिद्ध ग्रहों के साथ तिथि-नक्षत्रादि को भी दृक्प्रत्यय सिद्ध लेने की प्रक्रिया का विवेचन है। संस्कृतभाषा में यह पहला ग्रन्थ है, जिसमें दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन है।

२. पाश्चात्त्यं नीतिशास्त्रम् (राजशास्त्र) श्रीविश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि द्वारा रचित।

आकार रायल कपड़े की जिल्द, पृष्ठ १०४ (१९६३ ई०) ४.००

इस ग्रन्थ में २१ परिच्छेद हैं। इनमें पाश्चात्त्य विद्वानों के मतों का सुन्दर विवेचन है। ग्रन्थ संस्कृतभाषा में लिखा गया है। पाश्चात्त्य राजनीतिदर्शन का यह उत्तम ग्रन्थ है।

३. अर्वाचीनं मनोविज्ञानम् (मनोविज्ञानशास्त्र) मामराजदत्त कपिल द्वारा रचित।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ४१६, (१९६४ ई०) ११.००

मनोविज्ञानशास्त्र का यह भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया प्रामाणिक ग्रन्थ है। विद्वान् लेखक ने सुन्दर ढंग से आधुनिक विचारधारा की प्राचीनता के साथ समन्वित करने का प्रयास किया है।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

४. **अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम्**—(ज्योतिषशास्त्र) श्रीरामनाथ सहाय द्वारा रचित ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ३४६ (१९६४ ई०) १३.००

इसमें पाश्चात्त्य ज्योतिर्विज्ञान का गम्भीर विवेचन है। ग्रंथ के अन्त में पाश्चात्त्य ज्योतिर्विदों के नाम तथा ग्रहों की सूची भी संलग्न है ।

५. **ज्योतिर्विज्ञानम्** (ज्योतिषशास्त्र) अर्कसोमयाजी धूलिपाल द्वारा विरचित ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २४४, (१९६४ ई०) ९.००

इस ग्रन्थ में प्राच्य-पाश्चात्त्य सिद्धान्तों की तुलना करके आर्ष सिद्धान्त को स्थिर किया गया है। इसके ३ भाग हैं—२. गणित जानने वालों के लिए और १. ३. जो गणित नहीं जानते हैं उन्हें भी सिद्धान्त का परिचय देगा ।

६. **अभिनवमनोविज्ञानम्** (मनोविज्ञानशास्त्र) डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री विरचित ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २८२, (१९६५ ई०) ६.००

मन के विषय में अध्ययन प्राचीन काल से होता आ रहा है। पाश्चात्त्य पद्धति से मन, उसकी क्रिया तथा गुण का अध्ययन इस ग्रन्थ में किया गया है ।

७. **भारतस्य सांस्कृतिको दिग्विजयः** (इतिहास) हरिदत्त वेदालङ्कार द्वारा प्रणीत । सस्कृत-भाषा अनुवादक और सम्पादक—डॉ० कालिका प्रसाद शुक्ल ।

आकार रायल, पृ० ३७०, कपड़े की जिल्द, (१९६७ ई०) १०.००

इस ग्रन्थ में यह प्रतिपादित किया गया है कि भारत ने विश्व के किन किन भागों में जाकर धार्मिक एवं सांस्कृतिक विजय प्राप्त की थी और अपनी संस्कृति की छाप छोड़ी थी। इसकी सिद्धि में अनेक प्रमाण दिये गये हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

८. ***अनुसन्धानपद्धतिः** (कला) डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' द्वारा रचित ।

आकार रायल, पृष्ठ ५८, (१६६९ ई०) ३.००

अनुसन्धाता को अनुसन्धान कैसे करना चाहिए ? सार्थक अनुसन्धान क्या है ? मौलिक विचारों के आवाहन की क्या प्रक्रिया है ? आदि शंकाओं का युक्तियुक्त समाधान इस ग्रन्थ में किया गया । संस्कृतभाषा में अभी तक इस प्रकार के ग्रन्थ की रचना नहीं हुई है ।

९. **भारतीयविचारदर्शनम्** (राजशास्त्र) डा० हरिहरनाथ त्रिपाठी द्वारा विरचित । सम्पादक—डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ५१५, (१९७३ ई०) प्र०भा० ४०.००

„ „ „ , पृष्ठ–६५९ (१६७७) द्वि० भा०–१०५–६०

इस ग्रन्थ में भारतीय राजनीति और उसके अनुसार समाज एवं अर्थव्यवस्था का चित्रण किया गया है । अब तक हिन्दी में या अँग्रेजी में प्रकाशित ग्रन्थों के विचार भारतीय दृष्टिकोण से इस ग्रन्थ में संगृहीत है । ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा गया है ।

१०. **सरलत्रिकोणमितिः** (ज्योतिषशास्त्र) म० म० बापूदेव शास्त्री विरचित । सम्पादक—श्रीगोविन्द पाठक ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ—२०६, (१९७७) २६.००

म० म० बापूदेव शास्त्री द्वारा लिखित ज्योतिषशास्त्र से सम्बद्ध यह ग्रन्थ रेखागणित के दुरूह सिद्धान्तों को भी 'सरल' पद्धति से सुबोध बनाता है ।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

११. **ग्रहनक्षत्राणि**—(ज्योतिषशास्त्र) डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा विरचित। संस्कृत अनुवादक एवं सम्पादक—श्री कमलापति मिश्र।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २२, (१९८१), २३.००

यह ग्रन्थ विश्वविश्रुत विद्वान् डॉ० सम्पूर्णानन्द जी द्वारा मूलरूप में हिन्दी में लिखा गया था—जिसका यह संस्कृत संस्करण है। इस ग्रन्थ में ग्रहों एवं नक्षत्रों की गति तथा जीव जगत् पर उनके प्रभाव का गम्भीर अनुशीलन हुआ है। २८रेखाचित्रों के द्वारा ग्रन्थ के विषय को समझने में सहायता मिलती है।

—: ० :—

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

(६)

म० म० गोपीनाथकविराज-ग्रन्थमाला

१. **संस्कारदीपकः** (धर्मशास्त्र) श्रीहर्षनाथ झा द्वारा विरचित तथा श्रीरामचन्द्र शास्त्री खनङ्ग की टिप्पणी से युक्त।

सम्पादक—श्रीदुर्गाधर झा।

आकार रायल पृष्ठ ३४०, कपड़े की जिल्द (१९६३) ७·००

इस ग्रन्थ में पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार तेरह संस्कारों का विवेचन किया गया है। संस्कारों के ज्ञान के लिए ग्रन्थ उपयोगी है।

—०✻०—

(७)

वल्लभवेदान्त-ग्रन्थमाला

१. **शुद्धाद्वैतमार्तण्डः** (वेदान्तदर्शन) गोस्वामी गिरिधर द्वारा प्रणीत तथा प्रमेयार्णव (वेदान्त) बालकृष्णभट्ट कृत।

ब्रह्मवाद (वेदान्त) हरिरायजि विरचित।

सम्पादक—डॉ० सत्यनारायण मिश्र।

आकार डिमाई, पृष्ठ १५०, कपड़े की जिल्द, (१९६६) ५.००

ये तीनों ग्रन्थ वल्लभवेदान्त के सिद्धान्त-प्रतिपादक हैं। सम्पादक ने अनेक भाष्यकारों के मतों के साधर्म्य-वैधर्म्य की सूची बनाकर पाठकों का बड़ा उपकार किया है।

—०✻०—

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

पालि-ग्रन्थमाला

१. **अभिधम्मत्थसंगहो** — (१–२ भाग) [पाली] आचार्य अनिरुद्ध द्वारा विरचित। सम्पादक एवं हिन्दी भाषानुवादक भदन्त रेवतधम्म तथा श्रीरामशंकर त्रिपाठी।

आकार रायल, भाग—१, पृष्ठ ५२६, कपड़े की जिल्द (१९६७) १५.००
,, ,, भाग—२, ,, ७००, ,, ,, (१९६७) २०.००

त्रिपिटकों में अभिधम्मपिटक बुद्ध का वचन माना जाता है। यह स्थविरसम्प्रदाय का ग्रन्थ है। इसकी भूमिका और हिन्दीभाषानुवाद से ग्रन्थ का परिचय मिलता है। पालिभाषा न जाननेवालों के लिए भी ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है।

२. **जातकट्ठकथा** (पालि) श्रीबुद्धघोषाचार्य विरचित (यन्त्रस्थ)। सम्पादक—पं० श्रीलक्ष्मीनारायण तिवारी।

३. **विसुद्धिमग्गो** — (भाग १–३) (पालि) आचार्यबुद्धघोष द्वारा विरचित। भदन्तधर्मपाल कृत परमार्थमञ्जूषामहाटीका से युक्त। सम्पादक—डॉ० रेवतधम्म।

आकार रायल, भाग १, पृष्ठ ६४४, कपड़े की जिल्द, (१९६९) ३६.००
,, ,, ,, २, ५४८, ,, ,, (१९६९) ३२.००
,, ,, ,, ३, ५१९, ,, ,, (१९७२) २७.००

इस ग्रन्थ में तेइस परिच्छेद हैं। ग्रन्थकार की रचनाओं में यह ग्रन्थ मूर्द्धन्य है। टीका के साथ प्रकाशित होने से ग्रन्थ का मर्म उद्घाटित होता है।

४. **पालितिपिटकसद्दानुक्कमणिका** (पालिभाषाकोष)।
आकार रायल, भाग १, पृ० ९५२, कपड़े की जिल्द, (१९७९) १००.६०
,, ,, २ (यन्त्रस्थ)

यह ग्रन्थ दो भागों में लिखा गया है। प्रथम भाग में पालित्रिपिटक-शब्दानुक्रमणी है। द्वितीय भाग में पालित्रिपिटकगाथानुक्रमणी है। पालिसाहित्य में आये हुए शब्दों को इस ग्रन्थ में संगृहीत किया गया है।

—०*०—

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

योगतन्त्र-ग्रन्थमाला

१. *नित्याषोडशिकार्णवः—(तन्त्रशास्त्र) शिवानन्दकृत 'ऋजुविमर्शिनी' टीका और विद्यानन्द कृत 'पदार्थरत्नावली' टीकाओं से युक्त।

सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी।

यह ग्रन्थ महात्रिपुरसुन्दरी के आराधकों के लिए उपयोगी है। इसके अन्त में दीपकनाथसिद्धकृत त्रिपुरसुन्दरीदण्डक, शिवानन्दकृत सुभगोदय, सुभगोदयवासना, सौभाग्यहृदयस्तोत्र और अमृतानन्द-योगिकृत सौभाग्यसुधोदय तथा चिद्विलासस्तोत्र भी मूल रूप में संलग्न है। इसपर सम्पादक को सर्वोच्च कालिदास पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

२. *लुप्तागमसंग्रहः—(तन्त्रशास्त्र) म० म० प० गोपीनाथ कविराज द्वारा संकलित एवं सम्पादित।

आकार रायल, पृष्ठ २४२ कपड़े का जिल्द, (१९७०) प्र० भा० १२.००
" " " " " (१९८२) द्वि० भा० (यन्त्रस्थ)

यद्यपि आगमों की परम्परा का लोप रहने से अनेक ग्रन्थ लुप्त हैं, तथापि उपलब्धागमग्रन्थों एवं टीकाओं में उद्धृत आगमवचनों के संग्रह का यह प्रथम प्रयास है। इसमें २२१ आगमों के वचनों का संग्रह किया गया है।

३. *तन्त्रसंग्रहः—भाग—१ (तन्त्रशास्त्र) सम्पादक—म०म०पं०गोपीनाथ कविराज।

प्रथम भाग में सवृत्तिक विरूपाक्षपञ्चाशिका, सटीक साम्बपञ्चाशिका, व्याख्यासहित त्रिपुरामहिमस्तोत्र, स्पन्दप्रदीपिका, अनुभवसूत्र और वातुलशुद्धाख्यतन्त्र—ये ६ तन्त्र संगृहीत हैं।

---

* तारांकित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri.

४. *तन्त्रसंग्रहः—भाग—२ (तन्त्रशास्त्र)। सम्पादक—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज।

इस द्वितीय भाग में निर्वाणतन्त्र, तोडलतन्त्र, कामधेनुतन्त्र, फेत्कारिणीतन्त्र, ज्ञानसंकलिनीतन्त्र, सवृत्तिका देवीकालोत्तरागमादि ६ तन्त्र संगृहीत हैं।

५. **महार्थमञ्जरी** (तन्त्रशास्त्र) श्रीमहेश्वरानन्द द्वारा प्रणीत। स्वोपज्ञ-परिमलाख्या टीका सहित।

सम्पादक—पं० व्रजवल्लभ द्विवेदी।

आकार रायल, पृ० ३०३, कपड़े की जिल्द, (१९७२) १७.५०

शैवदर्शन का यह प्रमुख ग्रन्थ है, जिसे क्रमदर्शन भी कहा जाता है। मूल कारिकाएँ प्राकृतभाषा में लिखी गई है। इसपर महेश्वरानन्द ने मूल कारिकाओं की छाया तथा **'परिमल'** नामक व्याख्या संस्कृत में लिखी है। भाषा प्राञ्जल एवं विस्तृत है।

६. **तन्त्रसंग्रह** [तृतीय भाग] (तन्त्रशास्त्र) सम्पादक—डा०रामप्रसाद त्रिपाठी।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ—६७६, (१९७९) ९२.२०

इस तृतीय भाग में गन्धर्वतन्त्र, मुण्डमालतन्त्र, कामाख्यातन्त्र, सनत्कुमारतन्त्र, भूतशुद्धितन्त्र, कङ्कालिनीतन्त्र—इन ६ तन्त्रों का संग्रह है।

७. **रुद्रयामलम्**—(तन्त्रशास्त्र) सम्पादक - डा० रामप्रसाद त्रिपाठी।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ—८७१, (१९८०) ६४.००

'रुद्रयामलम्' तन्त्रशास्त्र का प्राणभूत ग्रन्थ है। अनेक पाण्डुलिपियों को आधार बनाकर इसका सम्पादन किया गया है। बहुत दिनों से यह ग्रन्थ अनुपलब्ध था। इसलिए विश्वविद्यालय ने इसका समालोचनात्मक संस्करण प्रकाशित किया है।

---

* ताराङ्कित ग्रन्थ अप्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

८. **तन्त्रसंग्रहः**—(चतुर्थ भाग) [तन्त्रशास्त्र] ।

सम्पादक—श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ३१६, (१९८१) ३२.००

'तन्त्रसंग्रह' के इस चतुर्थभाग में कुल सात तन्त्रों—
१. सर्वविजयितन्त्रम्, २. गुप्तसाधनतन्त्रम्, ३. मायातन्त्रम्, ४. षडाम्नायतन्त्रम्, ५. गायत्रीतन्त्रम्, ६. चीनाचारतन्त्रम्, ७. भूतशुद्धितन्त्रम्—का प्रकाशन हुआ ।

९. **परमानन्दतन्त्रम्** [तन्त्रशास्त्र]—सम्पादक—स्व० रघुनाथ मिश्र ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द (यन्त्रस्थ)

तन्त्रशास्त्र का यह प्रधान ग्रन्थ है । इसका सम्पादन शिवानन्द पन्त की टीका के साथ हुआ है । इसके प्रकाशन से तन्त्रशास्त्र के अध्येताओं को एक बहुमूल्य ग्रन्थ की प्राप्ति होगी ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

म० म० शिवकुमारशास्त्रि-ग्रन्थमाला

१. **परिभाषेन्दुशेखरः** [व्याकरणशास्त्र] पं० श्रीयागेश्वरशास्त्री द्वारा विरचित 'हैमवती' टीका से युक्त। सम्पादक डॉ० कालिका-प्रसाद शुक्ल।

आकार रायल, पृष्ठ ५६९, कपड़े की जिल्द, (१९७५) ४९.००

परिभाषेन्दुशेखर नामक ग्रन्थ नागेश के पुत्र के रूप में वैयाकरण समाज में मान्य है। इस पर अनेक विद्वानों ने अपनी लेखनी चलाकर अपने को धन्य माना है। यह टीका नवीन होते हुए भी तात्त्याशास्त्री द्वारा रचित **'भूति'** तथा जयदेव मिश्र द्वारा रचित **'विजया'** की जननी है।

२. **तत्त्वचिन्तामणिः** (मङ्गलवादान्त) [न्यायदर्शन] म० म० मथुरानाथ तर्कवागीश विरचित। 'तत्त्वचिन्तामणिरहस्य' व्याख्या सहित। सम्पादक—पं० श्रीबदरीनाथ शुक्ल।

आकार रायल, पृ० ७५, कपड़े की जिल्द, (१९७६) १५.००

३. **वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा** [व्याकरणशास्त्र]।

नागेशभट्ट विरचित। सम्पादक—डॉ० कालिकाप्रसाद शुक्ल।

आकार रायल, पृष्ठ–३०३, कपड़े की जिल्द (१९७७) ३६.००

'वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा' व्याकरणदर्शन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। 'वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा' का प्रकाशन सर्वप्रथम हो रहा है। यह ग्रन्थ सम्प्रति मूलमात्र ही मुद्रित हुआ है, किन्तु सम्पादक की विविध प्रकार की विस्तृत टिप्पणियों ने इस दार्शनिक ग्रन्थ को सुबोध बनाया है। इसके साथ ही साथ विस्तृत गवेषणापूर्ण तथा समीक्षात्मक भूमिका लिखकर सम्पादक ने व्याकरणदर्शन के ऐतिहासिक विकास की रूपरेखा भी प्रस्तुत की है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

४. **किरणावलीरहस्यम्** [वैशेषिकदर्शन] म० म० मथुरानाथ तर्कवागीश प्रणीत । सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री ।

आकार रायल, पृष्ठ—१६८, कपड़े की जिल्द, (१९८१) २४.००

उदयनाचार्य की '**किरणावली**' वैशेषिकदर्शन की अनुपम कृति मानी जाती है । अद्यावधि अनेक विद्वानों ने इस ग्रन्थ पर टीकाएँ लिखीं हैं । **म० म०** मथुरानाथ तर्कवागीश की '**किरणावलीरहस्य**' नामक टीका सर्वप्रथम यावदुपलब्ध 'द्रव्यरहस्य' तक प्रकाशित की गयी है । विश्वविश्रुत दार्शनिक श्रीगौरीनाथ शास्त्री जी ने अपनी मार्मिक भूमिका के साथ इसका सम्पादन किया है ।

५. **न्यायमञ्जरी**—[न्यायदर्शन] जयन्तभट्ट विरचिता ।

सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री ।

आकार रायल, कपड़े की जिल्द, (१९८२) प्रथम भाग (यन्त्रस्थ)

जयन्तभट्ट की कृति '**न्यायमञ्जरी**' की अनुपमेयता से न्यायदर्शन के विद्वान् सुपरिचित हैं । इसका प्रकाशन '**ग्रन्थिभङ्ग**' टीका के साथ हो रहा है । प्रथम भाग शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri
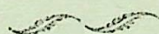
लघु-ग्रन्थमाला

२, ७, ८, १०, ११, १३, १५, १७, १९, २० संख्याङ्कित ग्रन्थ "सारस्वती सुषमा" के विभिन्न अङ्कों में मुद्रित हुए हैं। ये अलग से प्राप्त नहीं हो सकते*।

१. **अष्टादशपुराणव्यवस्था**—श्रीकाशीनाथ भट्ट द्वारा रचित।
सम्पादक—पं० मुरलीधरमिश्र।
आकार रायल पृ० १८ (संवत् २०१५ वि०)

२. **काण्वसंहिताभाष्यसंग्रहः** (वेद) आनन्दबोध भट्टोपाध्याय द्वारा रचित। सम्पादक—डॉ० सुभद्र झा एवं श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी।
(वर्ष ७, अ० १ से ४)
(,, ८, ,, १ - ४)
(,, ९, ,, १)

३. **कोविदानन्दः** (अलङ्कारशास्त्र) आशाधरभट्ट द्वारा विरचित स्वोपज्ञ 'कादम्बिनी' टीका सहित। सम्पादक–डा० कालिकाप्रसाद शुक्ल। (वर्ष १६, अं० ३-४)

इसमें अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना वृत्तियों का १२५ कारिकाओं में विवेचन है।

---

* क्रम संख्या १ से २६ तथा क्रम सं० २९ एवं ३० पर उल्लिखित लघुग्रन्थों की प्रतियाँ अलग से नहीं छपी हैं। वे सारस्वती सुषमा के उन-उन अंकों में ही प्राप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

४. **गलितप्रदीपः** (वेद) श्रीलक्ष्मीधरसूरि द्वारा रचित ।

सम्पादक—श्रीकृष्णदेव शर्मा ।

(वर्ष १४, अङ्क ४)

५. **गैरिकसूत्राणि** (कला) गङ्गारामजी द्वारा रचित । श्रीरघुनाथ शर्मा कृत विवरण सहित ।

सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी ।

(वर्ष १२, अ० ३-४)

ग्रन्थों में ध्यानाकर्षण के लिए किन-किन प्रतीकों तथा वाक्यों को रेखाङ्कित किया जाना चाहिए यह सूत्रों में प्रतिपादित है । यह अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ है ।

६. **देवीपुष्पाञ्जलिः** (स्तोत्र) रामकृष्णकृत । पं० श्रीरामसहाय दीक्षित द्वारा रचित व्याख्या से युक्त ।

(वर्ष २१, अ० २)

दुर्गासप्तशती के आधार पर रची गयी यह स्तुति संस्कृतव्याख्या के साथ मुद्रित है ।

७. **पञ्चस्कन्धप्रकरणम्** (बौद्धदर्शन) आचार्यवसुबन्धु द्वारा विरचित ।

सम्पादक—श्रीशान्तिभिक्षु शास्त्री ।

(वर्ष १०, अ० १-४)

८. **पथिकजनपातकचिन्तनस्मृतिः** (यात्रावर्णन) श्रीमहेशभट्ट विरचित ।

सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी ।

(वर्ष ७, अङ्क १)

९. **पलभागखण्डनम्** (ज्योतिष) श्रीदैवज्ञरंगनाथ विरचित ।

सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा ।

(वर्ष १६, अङ्क १-२)

५

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१०. **प्रत्यङ्गिरासूत्रम्**—पिप्पलादशाखीयम् (वेद) श्रीवासदेव द्विवेदी द्वारा रचित व्याख्यान सहित ।

सम्पादक—डा० सुभद्र झा एवं श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी ।

(वर्ष ७, अङ्क ३-४)
(,, ८ ,, १)

११. **प्रत्याख्यानसंग्रहः**—(व्याकरण) नागेश भट्ट विरचित ।

सम्पादक—श्रीसूर्यनारायण शुक्ल, श्रीअनन्तशास्त्री फडके एवं श्रीदेवदत्तशर्मोपाध्याय ।

(वर्ष २, विशिष्टांक)

(,, ३, ,,)

१२. **प्रमाणविनोदः**—(नव्यन्याय) श्रीचित्रधर मिश्र द्वारा रचित ।

सम्पादक—श्रीढुण्डिराज शास्त्री ।

(वर्ष १३, अंक १-४)

१३. **बीजगणितावतंसः**—(गणितज्योतिष) श्रीनारायण पण्डित द्वारा रचित ।

सम्पादक—श्रीचन्द्रभानु पाण्डेय ।

(वर्ष ८, अंक १-४)
(,, ९, ,, १-२)

१४. **भङ्गीविभङ्गीकरणम्** (ज्योतिष) श्रीरङ्गनाथ भट्ट द्वारा रचित ।

सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा ।

(वर्ष १३ अंक ४)

१५. **भारोत्थापनयन्त्रनिर्माणविधिः**—(शिल्पशास्त्र) श्रीदेवीसिंह महीपति द्वारा रचित । सम्पादक—श्रीव्रजवल्लभ द्विवेदी, प्राक्कथन-लेखक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ।

(वर्ष १२, अंक २)

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१६. **लोहगोलखण्डनम्**—(ज्यौतिष) रङ्गनाथ रचित।
लोहगोलसमर्थनम्— ,, गदाधर रचित।
सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
(वर्ष १६, अंक ३-४)
दोनों ग्रन्थ एक साथ मुद्रित हैं। इनमें आकाश के वर्ण के सम्बन्ध में विचार किया गया है।

१७. **श्रीरामकर्णामृतम्**—(खण्डकाव्यम्) श्री ति० मा० नारायण शास्त्री द्वारा रचित। सम्पादक—श्री क० वे० कृष्णमूर्ति।
(वर्ष ११, अंक १-२)

१८. **सिंहलताजिकोक्ताः षोडशयोगाः**—(ज्योतिषशास्त्र) प्रश्नसार। श्रीनृसिंहदैवज्ञ विरचित। सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
(वर्ष १६, अंक १)

१९. **सिद्धान्तचूडामणिः**—(सिद्धान्तज्योतिष) श्रीरङ्गनाथ भट्ट द्वारा विरचित। सम्पादक—श्रीमीठालाल ओझा।
(वर्ष ९ अंक १ से ४)
(,, १०, ,, १-४)
(,, ११, ,, १-२)
(,, १२, ,, १-४)

२०. **सुवर्णमुक्तासंवादः** (लघुकाव्य) श्रीमहेशमनीषी द्वारा विरचित।
सम्पादक—वटुकनाथशास्त्री खिस्ते।
(वर्ष ४, अंक २)

२१. **निपातोपसर्गद्योतकवाचकत्वविचारः**—[व्याकरणशास्त्र] श्रीहरिकृष्ण विरचित। सम्पादक—श्रीचन्द्रभानु शर्मा भारद्वाज। व्याकरणशास्त्र का यह लघुग्रन्थ है। इसमें निपातों की द्योतकता तथा वाचकता जैसे गम्भीर विषय पर विचार किया गया है। इसका प्रकाशन अलग से पुस्तक के रूप में न होकर सारस्वती सुषमा के **२८ वर्ष** के **प्रथम** अंक में हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

२२. **जातकसारः—**[ज्योतिषशास्त्र] अज्ञात कर्तृक।

सम्पादक—डा० मुरलीधर चतुर्वेदी।

ज्योतिषशास्त्र के इस लघुग्रन्थ का प्रकाशन सारस्वती सुषमा के **२९ वर्ष** के **द्वितीय अंक** में हुआ है।

२३. **गोत्रप्रवरभास्करः—**[धर्मशास्त्र] भट्टोजिदीक्षित विरचित।

सम्पादक—डा० उमाशंकर त्रिपाठी।

गोत्र एवं प्रवर जैसे गूढ़ धर्मशास्त्रीय विषयों का विवेचन इस ग्रन्थ में हुआ है। सम्पादक की खोजपूर्ण भूमिका ने इस ग्रन्थ की महत्ता बढ़ायी है। इसका प्रकाशन सारस्वती सुषमा के **२९ वर्ष** के **तृतीय अंक** में हुआ है।

२४. **मुद्राराक्षसपीठिका :—**[साहित्य] अनन्त पण्डित विरचित।

सम्पादक—श्री अच्युतनाथ झा।

इस लघुग्रन्थ में **'मुद्राराक्षस'** नाटक की पूरी पृष्ठभूमि ऐतिहासिक दृष्टि से प्रतिपादित है तथा इसका प्रकाशन सारस्वती सुषमा के **२८ वर्ष** के **चतुर्थ अंक** में हुआ है।

२५. **सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः—**[नाथसम्प्रदायदर्शनशास्त्र] श्रीनित्यनाथ विरचित। सम्पादक—श्रीजनार्दन पाण्डेय।

इस लघुग्रन्थ में 'नाथसम्प्रदाय' के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन हुआ है और इसका प्रकाशन सारस्वती सुषमा के **२९ वर्ष** के **प्रथम अंक** में हुआ है।

२६. **व्याख्यानप्रक्रिया—**[व्याकरणशास्त्र] श्रीशशिदेव विरचित।

सम्पादक—डा० जानकी प्रसाद द्विवेदी।

व्याकरणशास्त्र का यह लघुग्रन्थ है और इसका प्रकाशन सारस्वती सुषमा के **३० वर्ष** के **३-४ अङ्कों** में हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

२७. **रसिकजीवनम्**--[साहित्यशास्त्र] पं० रामानन्दपति त्रिपाठी विरचित ।

सम्पादक--प्रो० करुणापति त्रिपाठी ।

आकार रायल, पृष्ठ-३९, (१९७८), कपड़े की जिल्द ७.००

इस ग्रन्थ में नायिकाभेद तथा शृङ्गारस का मौलिक विवेचन हुआ है । सम्पादक की लगभग ५० पृष्ठों की भूमिका में साहित्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में नायिका भेद की पृष्ठभूमि स्पष्ट की गयी है ।

२८. **वृत्तिवार्त्तिकम्**--[साहित्यशास्त्र] अप्पय्यदीक्षित विरचित ।

सम्पादक--डा० वायुनन्दन पाण्डेय ।

आकार रायल, पृष्ठ-२३ (१९७८) ४.००

इस ग्रन्थ के लेखक का पाण्डित्य सार्वभौम रहा है । इस ग्रन्थ में अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना आदि वृत्तियों का मार्मिक विवेचन हुआ है ।

२९. **भक्ति-(लक्षणा) विवेकः**--[भक्तिशास्त्र] आचार्य गोकुलनाथ विरचित ।

सम्पादक--श्रीजनार्दन पाण्डेय ।

इस लघुग्रन्थ में भक्तिसम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन हुआ है और इसका प्रकाशन सारस्वती सुषमा के ३० **वर्ष** के **३-४ अङ्कों** में हुआ है ।

३०. **अशौचनिर्णयः**--[धर्मशास्त्र] भट्टोजिदीक्षित विरचित ।

सम्पादक--डा० उमाशंकर त्रिपाठी ।

इस लघुग्रन्थ में शौचाशौच जैसे गम्भीर विषयों का विवेचन हुआ है तथा इसका प्रकाशन सारस्वती सुषमा के **३२ वर्ष** के **१-२ अङ्कों** में हुआ है ।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

३१. **उषारागोदयानाटिका** [साहित्य] श्रीमद्रुद्रचन्द्रदेव विरचित।
सम्पादक--श्रीगौरीनाथ शास्त्री।

आकार रायल, पृष्ठ--४४, (१९७६), २.००

यह नाटिका लघु होते हुए भी भाषा, शैली तथा लालित्य की दृष्टि से अनुपम है। सम्पादक ने अपनी सारगर्भित भूमिका में इस ग्रन्थ के रचनाकाल, रचयिता एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवेचन किया है।

३२. **स्तोत्रवल्लरी** [स्तोत्रसाहित्य] श्रीरघुनाथ शर्मा विरचित।

सम्पादक--श्रीरघुनाथ शर्मा।

आकार रायल, (१६७९) पृ० ७८ + ११ + ८ + १० + ३ ३.५०

इस लघुग्रन्थ में श्रीशर्मा द्वारा निर्मित कुल पाँच स्तोत्रों--

१. सन्ततिस्तवः, २. सूर्यस्तवः, ३. शनिस्तवः, ४. निर्वेदनिवेदनम्, ५. अनुभूतिप्रकाशः--का प्रकाशन किया गया है।

३३. **दीर्घवृत्तलक्षणम्** [ज्योतिषशास्त्र] स्व० सुधाकर द्विवेदी विरचित।
सम्पादक--डॉ० श्रीकृष्णचन्द्र द्विवेदी।

आकार रायल, पृष्ठ--७२ (१९८१) ४.५०

इस ग्रन्थ में ज्योतिषशास्त्रीय दीर्घवृत्तों का विवेचन हुआ है।

३४. **भाभ्रमरेखानिरूपणम्** [ज्योतिषशास्त्र] स्व० सुधाकर द्विवेदी विरचित।

सम्पादक--डॉ० श्रीकृष्णचन्द्र द्विवेदी।

आकार रायल, पृष्ठ--१६, (१९८१) २.००

इस लघुग्रन्थ में पृथ्वी पर आकाशीय ग्रहों की छाया के परिभ्रमण के विवेचन की गणित का ज्ञान कराया गया है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

३५. **विराड्विवरणम्**--[दर्शनशास्त्र] पं० रामानन्द पति त्रिपाठी कृत ।

सम्पादक--प्रो० करुणापति त्रिपाठी ।

आकार रायल (१९८२) (यन्त्रस्थ)

इस ग्रन्थ में ब्रह्म के 'विराट्' स्वरूप का वर्णन सूत्रबद्धरूप से किया गया है। लेखक की स्वोपज्ञवृत्ति ने ग्रन्थ के गूढ़भावों को स्पष्ट किया है।

३६. **वास्तवचन्द्रश्रृङ्गोन्नतिः** [ज्योतिषशास्त्र] स्व० सुधाकर द्विवेदी प्रणीत ।

सम्पादक--डॉ० कृष्णचन्द्र द्विवेदी ।

आकार रायल, (१ ८२) (यन्त्रस्थ)

इस लघुग्रन्थ में द्वितीया के चन्द्रमा का ज्ञान सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

३७. **प्रतिभाबोधकम्**—[ज्योतिषशास्त्र] स्व० सुधाकर द्विवेदी कृत ।

सम्पादक—डॉ० श्रीकृष्णचन्द्र द्विवेदी ।

आकार रायल, (१९८२) (यन्त्रस्थ)

इस ग्रन्थ में पृथ्वी एवं अन्य ग्रहों के धरातलीय प्रतिच्छायाओं का निरूपण किया गया है।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

[१२]

प्राकृत-जैनविद्याग्रन्थमाला

१. **परमागमसारो**--[प्राकृतभाषामय जैनदर्शन] श्रुतमुनि विरचित।
सम्पादक--डा० गोकुलचन्द्र जैन।
आकार रायल, पृ० ३०, (१९८१) ४.५०
'परमागमसारो' नामक लघुग्रन्थ **'प्राकृत-जैनविद्याग्रन्थमाला'** के प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ में जैन-दर्शन के सिद्धान्तों का विवेचन संक्षिप्तरूप में प्राकृतभाषा के माध्यम से किया गया है।

● ● ●

[१३]

परिसंवाद-ग्रन्थमाला

१. **बौद्ध तथा अन्य भारतीय योग-साधना**—[बौद्ध योग-साधना से सम्बद्ध] सम्पादक--श्रीरामशंकर त्रिपाठी।
आकार रायल, पृष्ठ—३७६, (१९७१) ३२.००
इस विश्वविद्यालय में समय समय पर जो अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठियाँ आयोजित होती हैं—उन्हीं लेखों को सम्पादित करके **'परिसंवाद'** नामक सीरिज में उनका प्रकाशन किया जाता है। 'परिसंवाद' के इस प्रथम भाग में **'बौद्ध तथा अन्य भारतीय योग-साधना'** सेसम्बद्ध निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इन निबन्धों का माध्यम हिन्दीभाषा है।

२. **भारतीय चिन्तन की परम्परा में नवीन सम्भावनाएँ**—[आधुनिकदर्शन से सम्बद्ध] सम्पादक—डॉ० राधेश्यामधर द्विवेदी।
आकार रायल, पृष्ठ—३६०, (१९८१) २३.००
'परिसंवाद' के इस द्वितीय पुष्प में **'भारतीय चिन्तन की परम्परा में नवीन सम्भावनाएँ'** विषय से सम्बद्ध अखिल भारतीय विद्वानों के चिन्तनपूर्ण दार्शनिक निबन्धों का प्रकाशन किया गया है। इन निबन्धों का माध्यम हिन्दीभाषा है।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

हस्तलिखितग्रन्थों की प्रकाशित
विवरणात्मिका सूची

१. **विवरणपञ्जिका** (प्रथम खण्ड, भाग-१) सरस्वतीभवन।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० ४०५ (१९५३) ३.२५
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **वेद** और **उपनिषद्** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

२. **विवरणपञ्जिका** (प्रथम खण्ड, भाग-२) सरस्वतीभवन।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २५८, (१९५३) २.०६
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **उपनिषद्** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। इस भाग के अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

३. **विवरणपञ्जिका** (द्वितीय खण्ड, भाग-१) सरस्वतीभवन।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३०६, (१९५३) २.५०
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **कर्मकाण्ड** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

४. **विवरणपञ्जिका** (द्वितीय खण्ड, भाग-२) सरस्वतीभवन।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृ० २२० (१९५३) २.००
इसमें सरस्वतीभवन में संगृहीत **कर्मकाण्ड** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

५. **विवरणपञ्जिका** (तृतीय खण्ड) सरस्वतीभवन।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २५६ (१९५६) ४.३१
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **धर्मशास्त्र** के ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

६. **विवरणपञ्जिका** (चतुर्थ खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३२६, (१९५७) ६.२५
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **पुराणेतिहास** और **गीता** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

७. **विवरणपञ्जिका** (पञ्चम खण्ड, भाग–१) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३२० (१९५८) ७.२५
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **स्तोत्रों** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

८. **विवरणपञ्जिका** (पञ्चम खण्ड, भाग-२) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ० ३१८ (१९५८) ७.२५
इसमें सरस्वतीभवन में संगृहीत **स्तोत्रों** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। ग्रन्थ के अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

९. **विवरणपञ्जिका** (षष्ठ खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ-२९८ (१९६०) ६.००
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **तन्त्रशास्त्र** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

१०. **विवरणपञ्जिका** (सप्तम खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३६५ (१९६१) ७.००
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **सांख्ययोग**, **पूर्वमीमांसा** तथा **वेदान्तदर्शन** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

११. **विवरणपञ्जिका** (अष्टम खण्ड) सरस्वतीभवन ।
आकर सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ४२६ (१९६२) ८.५०
इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **न्याय-वैशेषिकदर्शन** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१२. **विवरणपञ्जिका** (नवम खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३७४ (१९६३) ७.५०

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **ज्योतिषशास्त्र** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है ।

१३. **विवरणपञ्जिका** (दशम खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ २६० (१९६४ ६.००

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत **व्याकरणशास्त्र** के हस्त-लिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है ।

१४. **विवरणपञ्जिका** (एकादश खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ ३९४ (१९६४) ८.५०

इस भाग में सरस्वतीभवनस्थ **साहित्यशास्त्र** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में अकारादिक्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है ।

१५. **विवरणपञ्जिका** (द्वादश खण्ड) सरस्वतीभवन ।

आकार सुपर रायल, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ, ३३४ (१९६५) ८.००

इस भाग में **जैन, भक्ति-सम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्प, सङ्गीत, नीति, धनुर्वेद, पञ्जी, प्रशस्ति, चित्र; देशीभाषा** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है । अन्त में ग्रन्थों की अकारादिक्रम से सूची भी संलग्न है ।

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

[१५]

सारस्वती सुषमा

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय की त्रैमासिक अनुसन्धान पत्रिका का प्रकाशन सन् १९४२ ई० से निरन्तर होता आ रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशनारम्भ **'राजकीय संस्कृत कालेज'** के समय में ही हुआ था। तभी से यह अनुसन्धान पत्रिका अविच्छिन्न रूप से अपनी सारस्वत उपलब्धियों के माध्यम से संस्कृत जगत् को अभिनव दृष्टि प्रदान करती हुई आज ३७वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस गवेषणाप्रधान पत्रिका में संस्कृत वाङ्मय की सभी शाखाओं से सम्बद्ध पाण्डित्यपूर्ण मौलिक निबन्धों का प्रकाशन होता आ रहा है।

इस पत्रिका में अनुसन्धानप्रधान निबन्धों का तो प्रकाशन होता ही है साथ ही इस विश्वविद्यालय के विश्वविख्यात **'सरस्वतीभवन पुस्तकालय'** में सुरक्षित तत्तद्विषयों की **लघु-पाण्डुलिपियों** को **'लघु-ग्रन्थमाला'** के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। निःसन्देह वे लघुग्रन्थ **'सारस्वती-सुषमा'** के माध्यम से संस्कृत प्रेमियों के लिए बहुमूल्य उपहार हैं। इस अनुसन्धान पत्रिका का प्रचार-प्रसार भारतवर्ष में तो है ही, विदेशों में भी इसके पाठकों की संख्या पर्याप्त है।

इस पत्रिका के प्रथम अङ्क से लेकर अद्यावधि प्रकाशित प्रायः सभी अंक उपलब्ध हैं। **'सारस्वती सुषमा'** का वार्षिक **चन्दा दश रूपये** हैं और इसका प्रकाशन वर्ष में चार बार—**ज्येष्ठ, भाद्रपद, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन पूर्णिमा** को होता है।

इस विश्वविद्यालय में विशेष अवसरों पर विशिष्ट व्याख्यान-मालाएँ आयोजित होती रहती हैं। व्याख्यान के रूप में पठित तत्तत्-शास्त्रों से सम्बद्ध निबन्धों को सारस्वती सुषमा के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। अधोलिखित विशेषाङ्क अपने आप में तत्तत्-शास्त्रों के सारसंक्षेप हैं तथा संग्रहणीय हैं—

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

१. **दर्शनविशेषाङ्क** :—इस अंक में सभी आस्तिक दर्शनों पर तत्तत् दर्शनों के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये गवेषणाप्रधान निबन्धों का संग्रह है। यह विशिष्टांक 'सारस्वती सुषमा' के **ग्यारहवें वर्ष** के **३-४ अङ्कों** के रूप में प्रकाशित है— ४.००

२. **दर्शनविशेषाङ्क** :—इस विशेषांक में भी विभिन्न भारतीय दर्शनों के उद्भव एवं विकास तथा उनकी वैचारिक उपलब्धियों पर तत्तत्-शास्त्रों के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा लिखे गये अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। यह विशिष्टांक 'सारस्वती सुषमा' के **पन्द्रहवें वर्ष** के **१-४ अङ्कों** के रूप में प्रकाशित हुआ है— ७.००

३. **दर्शनविशेषाङ्क** :—इस विशेषांक में समस्त आस्तिक दर्शनों पर लिखे गये पाण्डित्यपूर्ण निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुछ निबन्ध पाश्चात्त्य-पौरस्त्य दर्शनों पर तुलनात्मक दृष्टि से भी लिखे गये हैं। इस विशेषांक का प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के **सतरहवें वर्ष** के **१-४ अङ्कों** के रूप में हुआ है— ७.००

४. **तन्त्रविशेषाङ्क** :—इस विशेषांक में तन्त्रवाङ्मय के तलस्पर्शी विद्वानों द्वारा लिखे गये निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के **बीसवें वर्ष** के **प्रथमाङ्क** के रूप में हुआ है— ७.००

५. **पुराणविशेषाङ्क** :—इस विशिष्टांक में पुराणसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा लिखे गये अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का संग्रह है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के **बीसवें वर्ष** के **३-४ अङ्कों** के रूप में हुआ है— ४.००

६. **वेदान्तदर्शनविशेषाङ्क** :—इस विशेषांक में वेदान्तदर्शन के सभी-सम्प्रदायों की दार्शनिक विवेचना से सम्बद्ध अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। विशेषांक सङ्ग्रहणीय है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के **इक्कीसवें वर्ष** के **३-४ अङ्कों** के रूप में हुआ है— ५.००

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

७. **बौद्ध-जैन-दर्शनविशेषाङ्क** :—इस विशेषांक में बौद्ध-जैन तथा शाक्तदर्शनों पर ख्यातिलब्ध विद्वानों द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। इस विशिष्टांक का प्रकाशन 'सारस्वती-सुषमा' के **चौदहवें वर्ष** के **चतुर्थ अङ्क** के रूप में हुआ है— ४.००

८. **व्याकरणदर्शनविशेषाङ्क** :—इस विशेषांक में व्याकरणशास्त्र के विविध पक्षों पर निष्णात विद्वानों द्वारा लिखित शास्त्रचिन्तनपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के **तेरहवें वर्ष** के **१-४अङ्कों** के रूप में हुआ है— ७.००

९. **रजतजयन्तीविशेषाङ्क** :—'सारस्वती सुषमा' का **छब्बीसवें वर्ष** का ३-४ अङ्क '**रजतजयन्तीविशिष्टाङ्क**' के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस अंक में प्रकाशित सभी निबन्ध पाण्डित्यपूर्ण हैं। इस विशेषांक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 'सारस्वती सुषमा' में प्रथम वर्ष से लेकर पन्द्रहवें वर्ष तक प्रकाशित निबन्धों तथा उनके लेखकों की सूची परिशिष्ट रूप में प्रकाशित की गयी है— ६.००

१०. **विश्वसंस्कृतसम्मेलनविशेषाङ्क** :—'सारस्वती सुषमा' के **३९वें वर्ष** के **१-४ अङ्कों** का प्रकाशन '**विश्वसंस्कृतसम्मेलन-विशेषाङ्कः**' के रूप में हुआ है। इस विशेषांक में संस्कृत जगत् की महान् विभूतियों के निबन्ध तो प्रकाशित हुए ही हैं—साथ ही '**व्याकरणदर्शनभूमिका**' नामक ग्रन्थ के प्रकाशन से यह विशेषांक संस्कृत समाज में सदा आदरपूर्वक स्मरण किया जाएगा। १०.००

●

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

प्रकाशनों के विक्रय के नियम

१. विश्वविद्यालय के प्रकाशन पुस्तकादेश के अनुसार वी० पी० पी०, रेलवे पार्सल द्वारा भेजे जाते हैं। पुस्तकें प्राप्यक (बिल) पर भी दी जाती हैं। प्राप्यक (बिल) पर प्रदत्त पुस्तकों का भुगतान तीन माह में आना आवश्यक है।

२. प्रेषित पुस्तकों का भुगतान नकद, पोस्टल-आर्डर अथवा बैंकड्राफ्ट, जिसका भुगतान वाराणसी में हो सके, के माध्यम से स्वीकार किया जाता है।

३. रेखांकित पोस्टल-आर्डर, बैंकड्राफ्ट **'वित्ताधिकारी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी'** के पक्ष में देय होना अपेक्षित है और रजिस्ट्री द्वारा उसे **'विक्रय अधिकारी'** के पते पर प्रेषित करना चाहिए। धनादेश (मनीआर्डर) लेने का नियम नहीं है।

४. पैकिंग तथा अन्य अपेक्षित डाक-व्यय ग्राहक को स्वयं वहन करना पड़ेगा।

५. रेलवे पार्सल द्वारा प्रकाशनों को मँगाने पर निकटतम रेलवे स्टेशन का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

६. पुस्तकादेश भेजते समय प्रकाशनों की सीरीज संख्या, क्रय संख्या तथा ग्रन्थों के नाम का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

७. पुस्तकें पूर्ण सावधानीपूर्वक पैकिंग करके भेजी जाती हैं। मार्ग में किन्हीं कारणों से पैकेट के क्षतिग्रस्त हो जाने पर उस क्षति के लिए विश्वविद्यालय उत्तरदायी नहीं होगा। बिके हुए प्रकाशन वापस नहीं लिये जाते।

८. प्रकाशनों के क्रय से सम्बद्ध पत्राचार **'विक्रय अधिकारी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी—२२१००२'** के पते पर किया जाना चाहिए।

प्रकाशनों पर देय छूट (कमीशन)

(क) सभी संस्थाओं, पुस्तकालयों, सरकारी विभागों तथा सामान्य ग्राहकों को एक साथ एक बिल पर ग्रन्थों के क्रय पर निम्नलिखित प्रकार से कमीशन दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

क्रयराशि	देय छूट (कमीशन) प्रतिशत में
१०० रू० तक	१५
१०१ रू० से ५०० रू० तक	२०
५०१ रू० से १००० रू० तक	२५
१००१ रू० से ३००० रू० तक	३०
३००० रू० से अधिक पर	४०

(ख) **पुस्तक-विक्रेताओं के लिए**

५०० रू० तक	२५
५०१ रू० से १००० रू० तक	३०
१००१ रू० से ३००० रू० तक	३५
३००० रू० से अधिक पर	४०

(ग) अनुसन्धान पत्रिका 'सारस्वती सुषमा' तथा 'दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग' पर निम्न प्रकार से छूट (कमीशन) प्रदान किया जाता है :—

विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित होनेवाली अनुसन्धान पत्रिका 'सारस्वती सुषमा' के प्राचीन अङ्कों (करेण्ट वर्ष के अङ्कों को छोड़कर) तथा पञ्चांङ्ग के क्रय पर सर्वसाधारण ग्राहकों को १० प्रतिशत तथा पुस्तक विक्रेताओं को २५ प्रतिशत की छूट दी जाती है ।

प्राप्तिस्थान--

विक्रय-विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय–वाराणसी,
२२१००२, उ० प्र० (भारत)

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

परिसंवाद ग्रन्थमाला का शुभारम्भ

प्राच्य भारतीय विद्या के अध्येताओं को सूचित करते हुए महान् हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस विश्वविद्यालय को **'परिसंवाद'** नामक नयी ग्रन्थमाला के शुभारम्भ का सुयोग प्राप्त हुआ है। इस ग्रन्थमाला में उस ज्ञान सामग्री को प्रकाशित किया जा रहा है, जो अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठियों (सेमिनारों) के माध्यम से प्राप्त होती है। **'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग'** एवं **'उत्तर प्रदेश शासन'** के आर्थिक सहयोग से प्रायः प्रतिवर्ष इस विश्वविद्यालय में एकाधिक अखिल भारतीय स्तर की परिसंवाद गोष्ठियों का आयोजन होता रहता है; जिसमें अखिल भारतीय ख्यातिप्राप्त मूर्द्धन्य विद्वानों के अनुसन्धानपरक तथा शास्त्रानुशीलनमूलक निबन्ध पढ़े जाते हैं और उन निबन्धों में प्रतिपादित सिद्धान्तों पर गम्भीर शास्त्रीय चर्चाएँ भी होती हैं। इस प्रकार तत्तद् गोष्ठियों में पढ़े गये निबन्धों को सम्पादित करके **'परिसंवाद'** ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया जाता है।

अब तक इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत निम्नलिखित दो ग्रन्थों का प्रकाशन किया जा चुका है—

[क]—**बौद्ध एवं अन्य भारतीय योग साधना का विकास**—मूल्य—३२.००

[ख]—**भारतीय चिन्तन की परम्परा में नवीन सम्भावनाएँ**—
मूल्य—२३.००

निःसन्देह उक्त दोनों ग्रन्थ अपने आप में तत्तत् शास्त्रों के सार-संक्षेप हैं। प्रायः हिन्दीभाषा माध्यम होने के कारण में ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं। वस्तुतः इस विश्वविद्यालय ने **'परिसंवाद'** ग्रन्थमाला के माध्यम से भारतीय विश्वविद्यालयों एवं बुद्धिजीवियों के समक्ष समकालीन चिन्तन की अभिव्यक्ति के द्वारा एक अभिनव आदर्श प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थमाला के तृतीय पुष्प का मुद्रण प्रारम्भ होने जा रहा है।

• • •

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri

आगामी प्रकाशन

१. **न्यायमञ्जरी**—**'ग्रन्थिभङ्ग'** टीका सहित, सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री

२. **साहित्यमीमांसा**—महाकवि मङ्खक विरचित, सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री

३. **व्याकरणदर्शनभूमिका**—स्व० रामाज्ञा पाण्डेय विरचित
सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री

४. **व्याकरणदर्शनपीठिका**—स्व० रामाज्ञा पाण्डेय विरचित
सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री

५. **काव्यप्रकाशः**—[द्वितीय भाग] **'विस्तारिका'** टीका सहित
सम्पादक—श्रीगौरीनाथ शास्त्री

६. **अद्वैतदीपिका**—नृसिंहाश्रम प्रणीत। सम्पादक—एस० सुब्रह्मण्य शास्त्री

७. **पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा**—डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

८. **श्लोकसिद्धान्तकौमुदी**—[प्रथम एवं द्वितीय भाग] पं० श्रीसुरेश झा प्रणीत

९. **निपातार्थनिर्णयः**—डॉ० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी प्रणीत।

१०. **लुप्तागमसंग्रहः**—[द्वितीय भाग]

११. **नित्याषोडशिकार्णवः**—द्वितीय संस्करण।

१२. **तन्त्रसङ्ग्रहः**—[प्रथम एवं द्वितीय भाग] द्वितीय संस्करण।

१३. **नृसिंहप्रसादः**—[संस्कारसारः] दलपति महाराज विरचित।

१४. **परमानन्दतन्त्रम्**—प्राचीन टीका सहित।

१५. **शारदातिलकम्**—'[illegible]' टीका सहित।

१६. **दुर्गासप्तशती**—छः टीकाओं सहित।

१७. **काण्वशतपथब्राह्मणम्**—समालोचनात्मक संस्करण।

१८. **वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा**—**'कला'** एवं **'कुञ्जिका'** टीकाओं सहित।

१९. **वैयाकरणभूषणसारः**—हिन्दी व्याख्या सहित।

२०. **आर्यभटीयम्**—दो भाष्यों सहित।

२१. **सूर्यसिद्धान्तः**—प्राचीन टीका सहित।

२२. **तौतातितमततिलकम्**—समालोचनात्मक संस्करण।

CC-0. In Public Domain. Swami Ram Shaiva Ashram. Digitized by eGangotri